





अमर वाणी

पुणा दधि लघु लघुल,
तुला दधि च पाचकः,
शामुना किम् नृनीतो सौ?
त मयम् याचये रिति ।

॥ १ ॥

[तुलने के कई हल्के हैं, कई से भी पाचक हल्का है। लेकिन तुला पाचक को क्यों ब्रह्मा नहीं देती? क्योंकि वह उसके भी याचना करेगा, इसलिये ही।]

बालसखीत्वं, भकारण हास्यम्,
पत्नीषु विवाद, मसज्जन सेवा,
पादमवाप्त, मसंस्कृतावाणी,
यद्वत् नरो लघुता मृपयाति

॥ २ ॥

[बच्चों से प्रेमी, भकारण हँसी, स्त्रियों के साथ झगडा करना, दुष्ट की सेवा, गधों की खजारी, सम्भार हीन बाली-ये छठों हल्के हैं।]

किम् पौष्ट्यम् दक्षति यो न वार्तान्?
किम् वा घृतम् नाभिजवाय यत्स्यात्?
ना किम् क्रिया या न हितानुबद्धा?
किम् नीचितम् साधु विरोधि यद्वै?

॥ ३ ॥

[अरण्यजनों की क्या न करनेवाला पीछा ही किसलिये? पाचकों को न दिया आदिवासी छन ही क्यों? हित बिहीन काम से ही क्या मतलब है? दूरी प्रकार अच्छे लोगों के साथ अनुता मोतनेवाली बिदगी ही क्यों?

शुद्ध



हो विवाह

चंडीपुर नामक नगर में देवस्वामी नामक एक ब्राह्मण रहत काता था। उसके कमल लोचना नामक एक कन्या थी। वह बड़ी सुंदर थी। देवस्वामी के कुसुमायुध नामक एक शिष्य था। कुसुमायुध और कमल लोचना गुप्त रूप से प्यार करते थे।

इस बीच देवस्वामी ने अपने पुत्री का विवाह एक और युवक के साथ निश्चित किया। यह समाचार मिलते ही कमल लोचना ने अपने शिष्यतम कुसुमायुध के पास यों खबर भेजी "मेरे पिता ने एक दूसरे युवक के साथ मेरा विवाह करने का निश्चय किया है। मैंने तुमको अपने पति के रूप में वरण किया है, इसलिए तुम किसी तरह मुझे अपने घर से उठा ले जाने का उपाय सोच लो।"

यह खबर मिलते ही कुसुमायुध ने कमल लोचना को अमुक स्थान पर आ

जाने का समाचार भेजा और उस स्थान पर अपने सेवक को पोढ़े के साथ भेजा। कमल लोचना पूर्व निर्णीत प्रदेश में आकर बोढ़े पर सवार हो गयी। मगर कुसुमायुध के सेवक ने बोढ़े को अपने मालिक के पास न ले जाकर दूसरे मार्ग में बढ़ाया। सवेरा होते होते वे दोनों एक दूसरे नगर में पहुँचे।

"हम कहाँ आ रहे हैं? तुम्हारे मालिक कहाँ?" कमल लोचना ने सेवक से पूछा। "मेरे मालिक यहाँ कहाँ हैं? उनसे तुम्हारा क्या काम है? हम दोनों शादी कर लेंगे!" सेवक ने जवाब दिया।

कमल लोचना बड़ी सुसज्जित युवती थी। उसने सेवक से कहा—"तुमने यह बात मुझसे पहले क्यों नहीं बतायी? देरी ही क्यों? तुम जल्दी जाकर शादी के लिए कमल लोचना को अमुक स्थान पर आ

विनोद कला

कमल लोचना को बाहर घर तक ले करके वह दुष्ट सेवक कमल लोचना और घोड़े को एक बगीचे में छोड़ शादी के लिए आवश्यक सामग्री ले आने नगर में गया। सेवक के जाते ही कमल लोचना घोड़े पर छपार हो फूल बेचनेवाले एक बूढ़ के घर पहुँची। उसे सारी बातें सुनायी। बूढ़ ने उस युवती की सारी कहानों सुनकर अपने घर उसे आश्रय दिया।

इस बीच शादी के लिए आवश्यक सामग्री लेकर सेवक बगीचे में पहुँचा। वहाँ पर कमल लोचना और घोड़े को न पाकर उसने भांप लिया कि उसके साथ धोखा हो गया है। तब वह अपने मालिक के पास लौट कर बोला—“मालिक, आप भी कैसे भोले हैं? औरतों के मर्म को समझ नहीं पाये। मुझे कुछ लोगों ने देखा और बन्दी बनाया। कुछ लोग घोड़े को हड़प कर ले गये। मैं बड़ी मुश्किल से भाग बचाकर यहाँ पर आया हूँ।”



Fullscren 127 X

इसके कुछ दिन बाद कुसुमायुध के पिता ने एक दूसरी कन्या के साथ उसकी शादी पक्की की। वर पक्ष के लोग अपने बाहर की लौटते कमल लोचना के नगर में एक बगीचे में ठहरे। कुसुमायुध अकेले नगर देखने को चला पड़ा। उस वक्त कमल लोचना ने कुसुमायुध को देखा। उसने अपने को आश्रय देनेवाले से यह बात कही। वह बूढ़ कुसुमायुध से मिल कर उसे अपने घर ले आया।

कुसुमायुध ने कमल लोचना को देखा। सारी बातें उसके कानों में आ गईं और उसी वक्त कमल लोचना के साथ शादी कर ली। इसके बाद कुसुमायुध ने अपने सेवक को ढाड़ दिया, साथ ही अपने पिता के द्वार निश्चित की गयी कन्या के साथ भी कुसुमायुध ने विवाह कर लिया। क्योंकि वह उस कन्या के साथ विवाह करने घर से निकल न पड़ता तो उसे कमल लोचना प्राप्त न होती।



पिंड छूट गया

एक गाँव में लगभग सभी लोग वैष्णव थे। उस गाँव में एक दिन एक नया आदमी आया। वृषहर तक सारा गाँव प्रसन्न रहा, तब एक उबड़े वर को देख उसके सामनेवाले चबूतरे पर जा बैठे।

तब उसके सामने एक क्रीमती मकान था जिसके सामने एक फकीर का कड़ा हुआ। वह फकीर धुनों तक काला चोगा पहने हुए था। उसके हाथ एक छड़ी थी। छड़ी के एक छोर पर सिंह के सरवाली मुठ थी।

फकीर ने अपनी छड़ी से उस मकान की देहली पर दे मारा और चिल्ला कर कहा—“अरी कमबलत, मिला दे दो।”

इसके दूसरे ही क्षण उस घर की छतें टूटने लगीं और पड़ने लगीं और फकीर उस गठरी को लेकर चलता बना।

इस घटना को देख सारा आदमी अचरज में आ गया। वह सोचने लगा कि वह औरत फकीर को देख क्यों डर गयी? उसके साथ फकीर ने अच्छा व्यवहार भी नहीं किया था, फिर तो उसे भिक्षा क्यों दी? अपनी यह शंका दूर करने के लिए नया आदमी उस औरत के पास पहुँचा। उसने पूछा—“भाईजी, तुमने उस फकीर को गालियाँ न देकर मिला क्यों दी?”

औरत ने नाटे की ओर तीक्ष्ण दृष्टि से देखा और पूछा—“क्या तुम नहीं जानते?”

“मैं नहीं जानता, मैं आज ही इस गाँव में आया हूँ।” नाटे ने जवाब दिया।

इस पर औरत नरम शब्दों में बोली—“क्या बताऊँ बेटा? वह फकीर हमारे मालिकाने कांपते हुए आ पहुँचे और पोंछे एक पिंड सर लाया था। कोई नहीं भिक्षा की गठरी दे गयी। फकीर उस गठरी को लेकर चलता बना।



छड़ी से वह जिस घर की देहली पर भारेगा, उस घरवालों को उसे उसकी मनचाही भिक्षा देनी पड़ती है। छड़ी की भार देहली पर पड़ते ही लगता है कि मन को किसी माया ने घेर लिया हो। ओम होश भी खो बैठते हैं। उस फकीर के चले जाने के बाद ही माया हट जाती है और लोग होश में आ जाते हैं। उसके चले जाने के बाद उसे लाख शालियाँ देने से क्या फायदा? वह भिक्षा लेकर गाँव के बाहर के बगीचे में पला जाता है।”

नाटा आदमी से बातें सुन श्रावचर्य में आ गया और बोला—“तब तो वह रोख इस तरह भिक्षा माँगने के बखल किसी

बनाकर उससे काफी धन कसूल कर सकता है और भाराम से रह सकता है त?”

“मैंने तुम्हें बताया कि वह भिक्षावाली छड़ी है। खाने के लिए भीख माँगने तक ही उसका असर रहता है, धन माँगने पर उसका असर जाता रहता है।” उस श्रोत ने समझाया।

“क्या गाँव के किसी आदमी ने भी उस छड़ी को छीनने का प्रयत्न नहीं किया?” नाटे ने फिर पूछा।

श्रोत ने सहमी हुई आवाज में उत्तर दिया—“ओह! इतनी हिम्मत किसमें है?”

“मैं उस भिक्षावाली छड़ी को उठा खाता हूँ।” नाटे ने कहा।

“बेटा, यह बात मुझसे कहने से क्या फायदा? नाम को सब लोग पुराण सुनने के लिए राममंदिर में जमा हो जाते हैं। उन लोगों से क्यों नहीं बताते?” शीं कहकर श्रोत ने दरवाजा बंद कर लिया।

उस दिन शाम को राममंदिर के पास जाकर नाटा आदमी सबसे मिला और उन्हें अपनी योजना का परिचय देकर कहा—“आप लोगों की सहायता हो तो मैं यह काम कर सकता हूँ।”

कुछ लोगों ने नाटे की बातों पर ध्यान न दिया। कुछ लोग उसकी शल्ल देखकर

तुम्हें किस तरह का मदद चाहिये।

नाटे ने उन लोगों को अपनी योजना का पूरा परिचय दिया और तब वह अपने निवास की ओर चल पड़ा।

दूसरे दिन सबेरे आम के बगीचे में फकीर जब नींद में पड़ा तब उसने देखा कि थोड़ी दूर पर नाटा आदमी गहरी नींद सो रहा है। फकीर ने उसकी ओर विशेष ध्यान नहीं दिया, अपने सिरहाने के नीचे रखी छड़ी लेकर गाँव की ओर चल पड़ा।

फकीर भिक्षा लेकर लौटा तो दुपहर हो गयी थी। उसने नाटे की ओर देखा; वह पेड़ से सटकर जैव रहा था। उसके सामने एक मिट्टी का बर्तन भींचे मुँह रखा गया था। बड़े के पास छोड़े की एक पतली छड़ी रखी हुई थी।

पेड़ पर बैठे कौआ बोल उठा। तब नाटा चौंक कर उठ बैठा। उसने फकीर की ओर तीक्ष्ण दृष्टि से देखा। तब छोड़े की छड़ी लेकर मिट्टी के बर्तन पर तीन बार दे मारा। इतने में ही गाँव से कुछ लोग आ पहुँचे और नाटे के सामने तरह-तरह के व्यंजन रख दिये। उनमें से नाटे ने अपने लिए आवश्यक चीजें मात्र लेकर उन्हें वापस भेज दिया।



वह दृश्य देख फकीर चकित रह गया।

उसे लगा कि उसकी इस छड़ी की अपेक्षा मिट्टी का बर्तन ज्यादा उपयोगी है। उसे तो रूप में जाकर छड़ी की मदद से आवश्यक भिक्षा ले जानी है। मगर इस नाटे के पास सब तरह के खाने के पदार्थ अपने आप आ जाते हैं। उनमें से वह अपने लिए आवश्यक चीजें ले लेता है। वह एक जगह बैठे-बैठे अपना पेट भर रहा है। उसका काम बड़ा ही आरामदेह है।

वह सोचकर फकीर नाटे के पास आया और बोला—“कहो भाई, कैसे हो? कुशल हो न?”

भाई बाहव, मैं अपनी बात क्या कहूँ? पहले तुम बताओ, तुम्हारी लकीर कौनसी है?" नाटे ने फकीर का परामर्श किया।

"भाई, क्या बताऊँ? उम्र बढ़ती जा रही है। बूढ़ा हो गया है, गाँव के चार-पाँच घर घूमने में परेशान हो जाता हूँ।" फकीर ने मिट्टी के बर्तन की ओर आधा नरी वृष्टि से देखते हुए कहा।

नाटे ने इसका कोई जबाब नहीं दिया। क्यों कि फकीर का विश्वास अब तक मिट्टी के बर्तन पर जमा न था, इसलिए उसने इसकी चर्चा नहीं की।

मगर उस दिन रात को भी नाटे ने मिट्टी के बर्तन पर लोहे की छड़ी से तीन बार दे मारा और बीटे-बीटे खाना भगवा लिया। इसे देख फकीर विस्मय में आ गया और बोला—“भाई, सुनो! तुम तो जवान हो, चार-पाँच गलियाँ घूम कर भिक्षा माँग सकते हो। मैं बूढ़ा हो गया हूँ। क्या तुम मेरी छड़ी लेकर अपना बर्तन भुक्षे दे सकते हो?”

Fullscrean 127 X

कोई दूसरा माँग संभला तो मैं न देता, लेकिन तुमने मेरे साथ नाटे का नाता जोड़ दिया, इसलिए मैं यह बर्तन तुम्हें दे देता हूँ।" यों कहते नाटे ने फकीर की छड़ी लेकर अपना बर्तन उसे दे दिया।

दूसरे दिन सबेरे फकीर ने नीर से जागकर देखा, नाटे का कहीं पता न था। वह दुपहर तक भ्रम के अंधारे में ही बैठा रहा और लोहे की छड़ी से बर्तन पर तीन बार दे मारा। मगर उसके पास कोई न आया। आखिर खोसकर उसने बाँव को खमीर पर दे मारा, वह हूट गया। इस पर फकीर भीख माँगने गाँव में गया, मगर गाँववालों ने उसे इस तरह दुस्तकार कर भगा दिया जैसे फुत्ते को भगा दिया जाता है।

तब फकीर उस गाँव को छोड़कर कहीं चला गया। वह खरब जब सारे गाँव में फैल गयी, तब गाँववाले बहुत खुश हुए।



[१२]

[मुट्ठेलों का नेता समरबाहु की रक्षा करने खड्गवर्मा और जीवदत्त चल पड़े। उन्हें एक जंगल में गुनामी से काम करानेवाले भालू की घात भरण किये हुए लोग दिखाई दिये। खड्गवर्मा और जीवदत्त उनके समीप जानेवाले हो थे, तभी उन्हें एक जगह धुआँ उठते दिखाई दिया। इस पर खड्गवर्मा और जीवदत्त उत्त और बढ़े। तब—]

खड्गवर्मा और जीवदत्त उन पेड़ों के लोंग डफली बचाते भालुओं को मचाते निकल गये जहाँ से धुआँ उठ रहा अपना मनोरंजन करने लगे।

या। एक पेड़ पर चढ़ कर देखने लगे कि सख्गवर्मा और जीवदत्त जब उस भालू की खालीवाला दल क्या कर रहा प्रदेश में पहुँचे, तब तक भालू की जाति है। जहाँ से धुआँ उठ रहा था, उसके का नेता समरबाहु की सुरंग के भीतर ले निकल ही जमीन में घंटा एक सुरंग गया था, इसलिए उन्हें वह दिखाई नहीं उन्हें दिखाई दिया। वहाँ पर भालू की दिया। मगर उन्होंने देखा कि ऊपर से खालवाले शिकार खेळ कर लाये हुए सुरंग में जाने के लिए भीतर की ओर जादवरों को आग में जलाने लगे। कुछ सीढ़ियाँ बनी हुई हैं।





"जीवदत्त, इस बंगलियों का निवास इसी सुरंग में मालूम होता है। उस सुरंग में से होकर जंगल में जाने के लिए कोई गुप्त मार्ग अवश्य होगा। हमें तो ऐसा मालूम नहीं होता कि ये लोग समरवाहू को जला कर खा रहे हों।" जह्मशर्मा ने बताया।

जीवदत्त ने उस प्रदेश को ध्यान से देखा, तब थोड़े स्वर में कहा—“मैं तो समझता हूँ कि स्वर्णकारी यह सोचकर वाहक डर गया है कि ये लोग मानव-भक्षक हैं। ये लोग वन्य में जिस धंध से खेरीबारी करते हैं, उसे देख लगता है कि इनके हाथ में जो लोग पड़ जाते हैं, उन्हें अपना गुलाम

समरवाहू और उसके अनुचरों को ये लोग सुरंग के भीतर ले गये होंगे। समर निश्चय ही ये लोग मानव-भक्षक नहीं हैं।”

जह्मशर्मा के मन में भी वही विचार पैदा हुआ। वह पेड़ की एक ऊँची डाल पर नट नट बोला—“ये लोग शिकार किये हुए जानवरों को जला रहे हैं; आकर्मियों को नहीं।”

खड्गवर्मा और जीवदत्त यों बात कर ही रहे थे तभी भालू की जाति का नेता समरवाहू और उसके अनुचर को अपने गुह के सामने ले गया। झुक कर प्रणाम करके बोला—“गृध्र भल्लूक! ये दोनों गृध्र जंगल में प्राप्त हो गये हैं। देखने में ये वीर, शाही और लड़ाकू लगते हैं। इन्हें हमारे अधीन में लाना मुश्किल मालूम होता है।”

गृध्र भल्लूक एक मोड़ समतल प्रदेश में एक ऊँची शिला पर बैठा हुआ था। उसके चेहरे को काले एक धातु का गर लटक रहा था। गृध्र भल्लूक के आसन के दोनों तरफ दो वर्षाकर भस्मि मूँ बाएँ लड़े हुए थे। आगे हाथ में लिये भल्लूक बाति के कुछ लोग वहाँ-तहाँ खड़े हैं; बंदिमों की ओर दाक रहे थे।

ये लोग समरवाहू और उसके अनुचर को कुछ ही क्षणों में मौत के मुँह में धँसनेवाले हैं। ये भी यह सोचकर बर रहे थे कि आदिवासी उन पर भेड़ियों को उकसा कर उनके द्वारा मरवा डालेंगे।

भल्लूक बाति के नेता की बातें सुन गृध्र भल्लूक सर हिलाते समरवाहू की ओर देखता रहा, तब बोला—“तुम्हारा रेष देखने से लगता है कि तुम सहर के निवासी हो; लेकिन तुम इस जंगल में किस काम से आये हो?”

समरवाहू की समझ में न आया कि इस समाल का क्या जवाब दिया था, तब थोड़ी देर तक सोचकर बोला—“मैं सहर का वाशिदा नहीं हूँ। सिंध रैगिस्तान से इस प्रदेश में आया हुआ हूँ। सैकड़ों की संख्या में मेरे अनुचर हैं। उन्हें कभी न कभी मेरे बंदी हो जाने की खबर लग ही जायगी। तब वे लोग तुम्हें और तुम्हारे इस सुरंगवाले गृह का सर्वनाश कर देंगे।”

“अरे तुम्हारा कठ-स्वर और पोछा खरीक के आवाज है।” यों कहते गृध्र भल्लूक खोर से हँस पड़ा और बोला—“तुम्हारे अनुचरों के मेरे सुरंगवाले गृह तक पहुँचने के पहले ही वे भल्लूक सेवक



उन्हें भेड़ियों की गीड़ का बाहार बना डालेंगे। इसलिए तुम मेरे सामने झींग मत गारो। मैं जानता हूँ कि तुम्हें और तुम्हारे इस अनुचर को अपने अधीन करने अथवा गुलामों के साथ तुम लोगों ने जो खेतों के काम कैसे कराने हैं।”

गृध्र भल्लूक की बातें पूरी हो गयी थीं तभी उसके दो अनुचर दौड़े-दौड़े वहाँ पर आ पहुँचे और समरवाहू तथा उसके अनुचर को देख ठिठककर रह गये। गृध्र भल्लूक ने उभरे पूछा—“कहो, बात क्या है?”

आश्चर्य व्यक्ति यह सवाल सुनकर समरवाहू की ओर ताकने लगे। तब गृध्र



भल्लूक ने खीसकर सर हिलाते कहा—
“चाहे वह गुप्त बाल मले ही क्यों न हों,
ये दोनों बंदी हमारा कुछ बिगाड़ नहीं
सकते। इन दोनों को मैं अभी भँड़ियों की
चट्टान के पास भेज रहा हूँ।”

“गुरु भल्लूक! यह अत्यंत मुप्त बात
है। आप वकिलों को ही यह बात सुननी
है।” यों कहते दोनों ने अपने गुरु के
निकट जाकर गुप्त रूप से उसके कान
में कुछ कहा।

गुरु भल्लूक पल-भर के लिए आपसमें
चर्चा कर रहा था। तब तबरेबाहू को पकड़
लानेवाले भल्लूक जाति के नेता की ओर
गुप्त दृष्टि से देख बोला—“गुप्तादी अबतक

है।” यों कह पल-भर सीन रहा, तब बोला—
“अच्छी बात है, इन दोनों बंदियों को
भँड़ियों की चट्टान के पास छोड़ आओ।
महले इनके बंधन खोल दो और दोनों के
हाथों में भाले दे दो।”

गुरु भल्लूक का आदेश प्राप्त होते ही
उसके अनुचरों ने सगरबाहू और उसके
सेवक के बंधन खोल दिये। उनके हाथों
में भाले देकर बोले—“अब चलो।” इसके
बाद उन्हें सभामण्डप के बाजु में स्थित
एक सुरंग-मार्ग में ले गये।

उनके जाते ही गुरु भल्लूक ने अपने
अनुचरों की ओर मुड़कर कहा—“इन नये
व्यक्तियों ने हमारे सुरंग के रहस्यों को
जान लिया होगा। उन पर अच्छी
निगरानी रखो। अगर वे इस प्रदेश से
भागने की कोशिश करें तो उन्हें प्राणों के
साथ पकड़कर यहाँ पर ले आओ।”

“जो आज्ञा, गुरु भल्लूक!” यों कहकर
उसके दस-बारह अनुचर झुककर प्रणाम
करके सुरंग की सीढ़ियों की ओर चले गये।

पेड़ की छाँटों में बँटे हुए खड्गवर्मा
और जीवदत्त को लगा कि दिन के बख्त
भल्लूक जाति के लोगों के सुरंग के पास
जाना सुतरे से खाली नहीं है। भल्लूक
जाति के लोग भल्लूकों की मचाते शिकार

उसका मांस खा रहे थे। दुश्मन को
कड़ी मूँच से सारा बँकल सप रहा था।
जीवदत्त ने पेड़ पर से नीचे उतरते
खड्गवर्मा से कहा—“खड्गवर्मा, हमें जो
कुछ देखना था, हमने देख लिया। यहाँ
पर समय बिताना बेकार है। भूल सता
रही है। यही पास के किसी तालाब में
स्नान करके पेड़ों के फल खाना होगा।
अंधेरा होने के बाद सुरंग में जाने का
प्रयत्न करेंगे।”

खड्गवर्मा जीवदत्त की बातें सुन
झुपचाप पेड़ से उतर आया। दोनों पानी
की खोज में चल पड़े। बोड़ी ढेर बाए
कोई तालाब के निकट पहुँचे। उस तालाब

के चारों ओर घने झाड़-मंजाब और वृक्ष
खड़े थे। जंगली जानवरों के तालाब के पास
पानी की खोज में आने व जाने के निशान
जीवदत्त को दिखाई दिये।

“खड्गवर्मा, हमें पत्थरी स्नान सम्पन्न
करके यहाँ से जाना उचित होगा। अगला
है कि जंगली जानवर और भल्लूक जाति
के लोग इस तालाब का पानी इस्तेमाल
करते हैं।” जीवदत्त ने कहा।

जीवदत्त यों कह ही रहा था कि तभी
खोड़ी दूर में झाड़ियों में छे चार-पाँच
जंगली मुँगे चिल्लाते बाहर आये। उन्हें
देखते ही उन पर बाण का बिशाना करके
छोटते खड्गवर्मा बोल उठा—“जंगली मुँगों
का मांस खाने काफ़ी दिन हो गये हैं।”





बाण सनसनाते बला गया। वह किसी जंगली भूषों की जा नहीं लगा। वे सब भूषों जिल्लाते उड़ गये। मगर इसके दूधरे ही क्षण उन्हें एक आदमी की बिल्लाहट मुतामी की—“हे गुरु भल्लूक! मैं मर गया!” यह बिल्लाहट सुनते ही खड्गवर्मा और जीवदत्त बल-भर के लिए चकित रह गये। “खड्गवर्मा, यह कैसी विचित्र बात है? तुमने जो बाण छोड़ा, वह जंगली भूषों को न लगा, बल्कि झाड़ी में छिपे किसी जंगली आदमी को जा लगा है। लेकिन यह गुरु भल्लूक कौन है?” यों कहते जीवदत्त झाड़ियों की ओर दौड़ पड़ा। खड्गवर्मा ने भी उसका अनुसरण किया।

पास जाकर देखा, भल्लूक तम धारण किया हुआ एक आदमी बटपटा रहा था। खड्गवर्मा का बाण उसकी छाती में चुन गया था।

जीवदत्त ने उसको निकट जाकर कहा—“तुम्हारा वेष देखते ही हम समझ गये कि तुम कौन हो। हमने तुम्हें मारने के लिए बाण नहीं छोड़ा। लेकिन तुम इन झाड़ियों में क्या कर रहे थे?”

जादल व्यक्ति ने जीवदत्त की बातें सुनीं, मगर यह प्रवाद देने की हालत में न था। वह झाड़ियों में दूधर-उधर झोटते गुनगुनाने लगा—“गुरु भल्लूक! गुरु भल्लूक!”

“जीवदत्त! यह एक-दो क्षण से ज्यादा देर तक जी नहीं सकता। मेरा संदेह है कि वे जंगली भूषों को पकड़ने के लिए इन झाड़ियों में तान लगाये बैठे होंगे या हम पर विगरानी रखने के लिए हीमा!” खड्गवर्मा ने कहा।

“तुम्हारे सवाल का जवाब देनेवाले की वाश्मा गुरु भल्लूक में मिल गयी होगी?” यों कहते जीवदत्त पीछे की ओर मुड़ा।

खड्गवर्मा ने भल्लूक जाति के व्यक्ति की ध्यान से जाँच की, उसे पढ़ा तथा कि

साथ झाड़ियों में से निकल कर तालाब के किनारे आ पहुँचा।

इसके बाद दोनों ने तालाब में स्नान किया। पास के वृक्षों से फल तोड़कर खाया। एक वृक्ष की छाया में शाम तक विश्राम किया, तब उन्हें संदेह हुआ कि सुरंग में रहनेवालों ने उनको गति-विधियों का अनुमान लगाया है। फिर भी उन दोनों ने यह निश्चय कर लिया कि समारवाह को बंधनों से मुक्त किये बिना उसका वहाँ से जाना उचित नहीं है।

सूर्यास्त के थोड़ी देर बाद सारे जंगल में अंधेरा छा गया। तब खड्गवर्मा और जीवदत्त सुरंग की ओर चल पड़े। वे

यह सोचकर सावधानी से चारों ओर देखते चलने लगे कि कोई पीछे से उनका अनुसरण तो नहीं कर रहे हैं। थोड़ी देर में वे सुरंग के पास पहुँचे। सुरंग के ऊपर या नीचे सीढ़ियों के पास भी उन्हें कोई पहरेदार दिखाई नहीं दिये।

“खड्गवर्मा, यहाँ की हालत समझ में आ गयी है न? इस सुरंग में रहनेवाले भल्लूक जाति के लोग समझते हैं कि वे हमें बड़ी होशियारी से बन्दी बसाने जा रहे हैं और हम लोग जान-बूझकर उनके बन्दी बन रहे हैं...पर बेचारे यह नहीं जानते कि इसके साथ उनका पूरा बल सर्वनाश होते जा रहा है!” जीवदत्त ने सुरंग की सीढ़ियाँ उतरते हुए कहा।



खड्गवर्मा भी उसके पीछे सीढ़ियां उतरने लगा। दोनों इस तरह कुछ सीढ़ियां उतरकर अंधकार से नरे एक बोंड़ को पार करने जा रहे थे, तभी दस-बारह भल्लूक जाति के लोग सड़ अंधेरे से बाहर भागे और भागे उड़ाकर बोले—“इहर जाओ, भागने की कोशिश करोगे तो तुम लोगों की छाती में भाले चुभी दिये जाएंगे।”

जीवदत्त ने उनकी ओर देख हँसते कहा—“अरे, तुम लोग इन बेकान भालों का हमें शिकार क्यों बनावा चाहते हो? भेड़ियों का आहार बना दो। पर इसके पहले हमें गुप्त भल्लूक के बर्तन तो करा दो।”

इस पर भल्लूक जाति का एक व्यक्ति धीमे स्वर में बोला—“अक! ओर से मत बोलो! गुप्त भल्लूक अपनी आराध्य देवी लूकेश्वरी की पूजा में निमग्न हैं। तुम लोगों को हम पहले भेड़ियोंवाली चट्टान के पास छोड़ देते हैं। वहाँ से अगर तुम

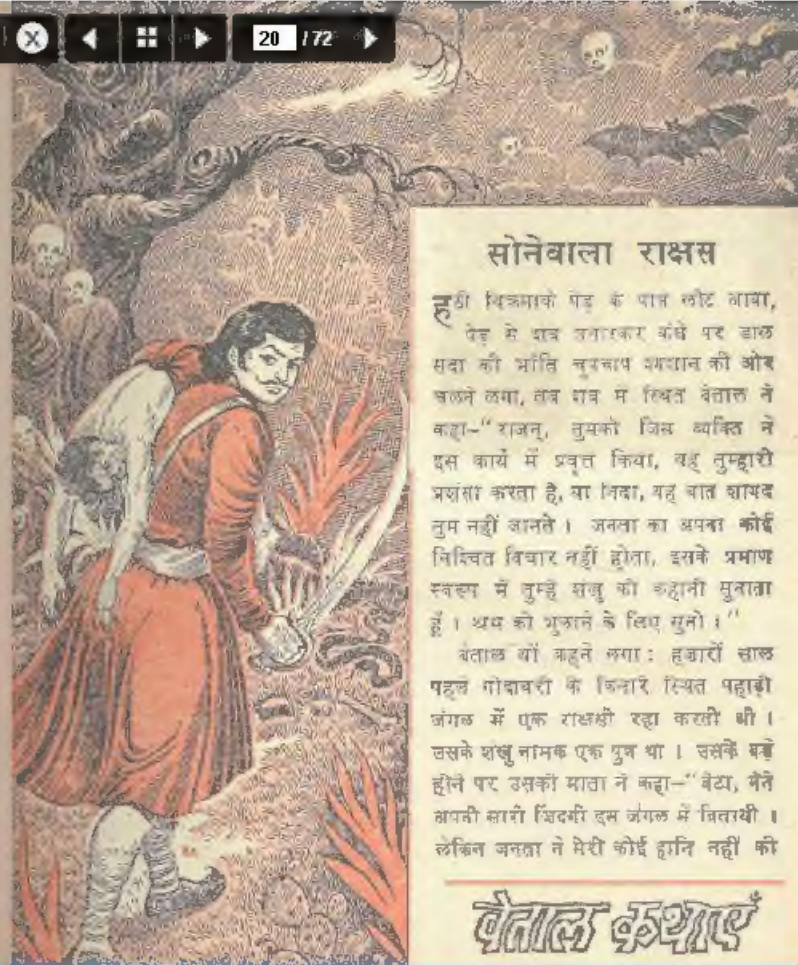
पकन करो दिये जायेंगे।”

“अच्छी बात है! भल्दी बताओ, भेड़ियोंवाली वह चट्टान कहाँ?” जीवदत्त ने अपनी हँसी को रोकते हुए कहा।

“कस्बवाली मत करो; नहीं पर जा रहे हैं।” यों कहते भल्लूक जाति के लोग खड्गवर्मा के आगे-पीछे फैलकर सुरंग की ओर बढ़े। उन्हें कहीं दूर पर भेड़ियों के गुर्जन और भय के मारे चिल्लाने वाले आदमियों की सयंकर आवाज उस सुरंग में प्रतिध्वनित होते सुनाई दी।

“खड्गवर्मा, यह आवाज समरबाहु और उसके अनुचर की होगी। कहीं भेड़िये उन्हें मार डालने का प्रयत्न तो नहीं कर रहे हैं?” जीवदत्त ने कहा।

खड्गवर्मा इसका जवाब देने को ही था, तभी भल्लूक जाति में से एक ने भाला चमकाते कहा—“चुप रह जाओ, एक-दो क्षणों में तुम लोग अपनी आँखों ने देखोगे कि वे भेड़िये क्या कर रहे हैं?” (और है)



सोनेवाला राक्षस

हरी विक्रमको पड़ के पात लोट गया, देड़ से शव उगारकर बंधे पर डाल सवा की भाँति नुरचप अगवान की ओर चलने लगा, तब शव में स्थित बैताल ने कहा—“राजन्, तुमको जिस व्यक्ति ने इस कार्य में प्रवृत्त किया, वह तुम्हारी प्रशंसा करता है, या निंदा, यह बात शायद तुम नहीं जानते। जनता का अपना कोई निश्चित विचार नहीं होता, इसके प्रमाण स्वल्प में तुम्हें शत्रु की कहानी सुनाता हूँ। शत्रु की श्रुताने के लिए सुनो।”

बैताल यों कहने लगा : हजारों साल पहले गोदावरी के किनारे स्थित पहाड़ी जंगल में एक राक्षसी रहा करती थी। उसके शत्रु नामक एक पुत्र था। उसके बड़े होने पर उसकी माता ने कहा—“बेटा, मैंने अपनी सारी श्रद्धा इस जंगल में जितायी। लेकिन जनता ने मेरी कोई हानि नहीं की

बैताल कहता है





Fullscrean 127 X 22 172

पहले आरम्भ करता है। वह पास से स्थित एक गुफा में पहुँचा। उसमें टण्डी हवा चल रही थी। शंख वहीं पर बैस पसार कर सो गया।

राज्य जब पहाड़ पर जड़े ही नगर की ओर विचित्र ढंग से देख रहा था, तब नगर के बाहर खेतों में काम करनेवाले कुछ लोगों ने उसे देखा और वे 'बाप रे राक्षस!' चिल्लाते शहर में दौड़ पड़े। उन लोगों ने शहर में जाकर सब को चेतावनी दी। इसके बाद कई हज़ार लोगों ने उन राक्षस को देखा था।

और न मैंने जंगल की कोई हानि की। मेरी उस हल शरी है। मैं समस्या करके शिवजी से लीन हो जाऊँगी। तुम जंगल पर निर्भर हो जा नहीं सकते। इसलिए तुम मानव-समाज में जाकर उन्हें डरा-धमाका या उनसे डरकर ही सही अपना पेट पाल लो।"

अपनी माँ के तपस्या करने चले जाने के बाद शंख जंगल से चल पड़ा और उसने एक पहाड़ पर खड़े हो ताराई में स्थित एक नगर की ओर देखा। उसने वहाँ पर मनुष्यों को देखा। उसे अपनी माँ की बात याद आयी कि जंगल में खीच जाकर पेट पालना होता। उसने

सब ने यही सोचा कि राक्षस जंगल पर दूर पहुँचा और सब को खा डालेगा। पाँच-छे महीने बाद शहर में एक भी आदमी और जानवर बचा न रहेगा। नगर के राजा ने सब लोगों को भाले और तलवार देने का आशवासन दिया। राक्षस को पहाड़ पर से उतरकर आते ही उसे मारने के लिए तरह-तरह के उपाय सोचे गये।

यही नहीं, उस दिन रात को शहर में कोई सोया नहीं। किसी ने दिया नहीं जलाया, अनेक लोग रात भर गलियों में घूमते रहे, सब की आँखें पहाड़ पर ही केन्द्रित थीं।

लेकिन राक्षस नगर के अन्दर न आया। दिन बीतते गये, पर राक्षस का पता न

था। जंगल का डर बार-बार जाता रहा। कुछ लोगों ने कहा कि राक्षस कहीं चला गया होगा। जो हिम्मतवर थे, वे खेतों में जाकर अपने काम करने लगे। मवेशियों को खेतों में चराने ले गये।

इस तरह कई दिन और महीने गुजर गये, पर कहीं राक्षस दिखाई न दिया। कुछ साहसी युवक परबु, कुल्हाड़ी, भाले इत्यादि लेकर पहाड़ पर चले गये। उन्हें एक जगह गुफा दिखाई दी। उसमें से उन्हें बचकर खुराँटे सुनाई देने लगे। साहसी युवक पहाड़ से उतरकर नगर में आये, सब को सूचित किया कि राक्षस कहीं नहीं गया है, वह गुफा के अन्दर सो रहा है। यह खबर सारे नगर में जाग की तरह फैल गयी।

पंडितों ने अवस्था—'राक्षसों का बल नीब में है। इसलिए नीब से जागने पर कोई उन्हें डरा नहीं सकता।' यह बात सुनने पर जनता और डर गयी।

राजा ने अपने मंत्रियों को बुलाकर समझाया—'हमें समाचार मिला है कि राक्षस गुफा में सो रहा है। इस बात पर विचार कीजिय कि गुफा में उसके सोते समय ही सार डालना शायद वासाल ही! पंडित बता रहे हैं कि नीब से जागने पर उसे डराना मुश्किल है।"

कुछ मंत्रियों ने सलाह दी—'राक्षस नगर के लिए हमेशा खतरनाक ही है, इसलिए मौका मिलते ही उसे सार डालना है।"





का भय न रहेगा। हम उसका पापण करके उससे काम लेंगे। इससे हमारा फायदा ही होगा।

यह सुनकर राजा और अन्य लोग भी बड़ा अफ़सोस लगा। इसके बाद जनता भी राक्षस के बारे में सच भूति दिखाने लगी। इसके कुछ समय बाद उस प्रदेश में अकाल पड़ा।

“राक्षस पहाड़ से उतरकर ह्वाय़ा बीच क्यों नहीं जाता? वह गोदावरी को हमारे नगर की तरफ़ मोड़कर ला सकता है। पानल से गंगा की अपर ला सकता है। नाम के बापसे हमारे लिए एक राक्षस है। पर उसके द्वारा हमारा कोई फ़ायदा नहीं होता।” नगर के बुजुर्गों ने कहा।

अकाल के साथ चोर और दुश्मन का मोलबत्ता बढ़ गया, रात के समय डाकू और चुरे स्कंधों की संख्या में अकाल नगर पर दृढ़ पड़ते और जो भी उनका सामना करते उन्हें मार डालते लगे। रात ही जो कुछ अनाज और पशु बच रहे उन्हें भी छूटकर ले जाते लगे।

दंग पर वृत्रमर्ग ने यन्त्रात ही ‘गशस्व’ को बुला करने का यही अच्छा भोज है जो हिंस्रतवर हैं, वे सब गुफा में जाकर राक्षस को नींद से जगाकर उठा देंगे।

सन्तान है। नींद में रहनेवाला हमारी जान पर ध्यान न देगा। उस वक़्त जा भी उसके सामने जायगा, उसे मार डालेगा।’ धुक्कों ने डरते हुए कहा।

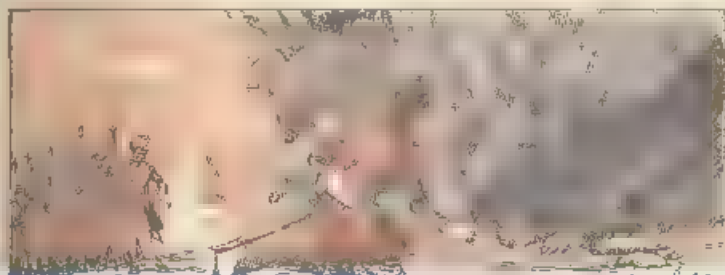
इसके बाद नगर बाध शय्य गया न उस नगर पर हमला किया। अब सपेक्षा करने में कोई फ़ायदा नहीं, यह धोबकर सेनापति कुछ युवकों को साथ लें पहाड़ पर गए। राक्षस की गुफा का पता लगाकर उस लोग ने गुफा के भीतर झाँककर देखा। नगर गुफा में राक्षस ने था। वह कभी उस गुफा से कहीं चला गया था। नगर शत्रु राक्षस के अधीन हो गया। राक्षस जनता के बीच न आया था। राक्षस जनता ने उस मगर ही मगर नगर नगर से गालियाँ दीं।

ये जो यह कहानी सुनाकर कहा— राक्षस नगर की जनता पहले राक्षस की याद कर डर गयी। फिर सुन हुई अंत में

गालियाँ भी दीं। बाधीचार्द भी दिया। लेकिन उस राक्षस के बारे में जनता का क्या किचर है? उसके प्रति जनता में प्रेम है या नहीं? इस सवाल का समाधान जानते हुए भी न होगे तो मुझारा सर टुकड़े टुकड़े हो जायगा।

इस पर विक्रमार्क ने यो उत्तर दिया— ‘जनता और राक्षस के बीच प्रेम और रक्त का कोई प्रश्न हो नहीं चला। जनता की दृष्टि में राक्षस एक महान नाकित है। राक्षस का कोई न आदर करता है और न प्रेम ही। जब उन्हीं यह प्रतीत होगा कि उसके द्वारा उनमें लिए खतरा है, तब वे उसे देख डर जायंगे। जब उन्हें यह मालूम होगा कि उसके द्वारा फ़ायदा होगा तब वे लोभ में पड़ जायेंगे। यदि समय पर उसके द्वारा कोई सहायता प्राप्त न होगी तब उसकी निंदा कागं।’

राजा के इस तरह भ्रम भंग होने ही मंतराव शत्रु के साथ गायब हो पड़ पर जा बैठा। (कल्पित)



मगर यह सलाह प्रधान मंत्री को पसंद न आयी। उसने यों समझाया— ‘महाराज, हम लोग शेर, बाघ मत्त हाथी इत्यादि जंगल जानवरों को पालतू बना रहे हैं, इसी हानस में इस राक्षस की पालतू बनाना कोई असंभव बात नहीं है। यह ज्यादा से ज्यादा एक ही आधमियों का खाना खा सकता है, मगर यह कुछ तुम्हारे सैनिकों के बराबर है। राक्षस केवल खाना चाहता है। वह भोजन देना और परंपरा रचना बिल्कुल नहीं जानता। यदि उसे पालतू बनाया जायगा तो वह मनुष्य से ज्यादा विश्वासपात्र बना रहेगा। इसलिए उसे नींद से जगाने कीजिए, हम

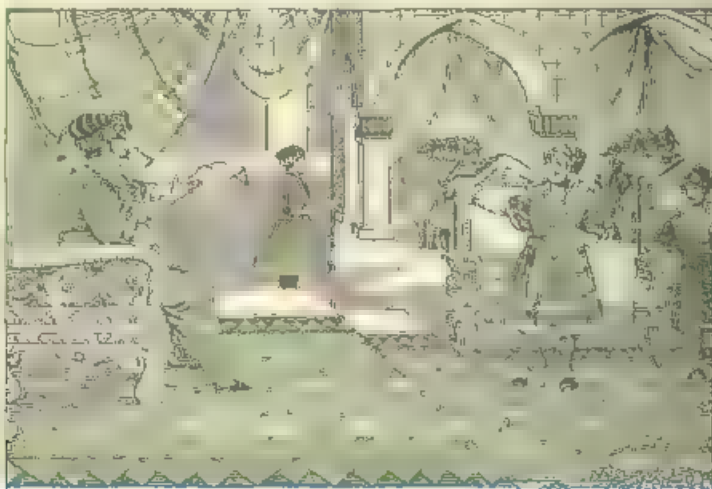
एक बार शरय के सीलागरी से उत्तम सरल के छोड़ों को लफेर कोपल राजा को लिवाया । राजा उन्हें देख बड़ा प्रसन्न हुआ । अधिक मूल्य देकर उन घोड़ों को खरीदा और दुबारा कुछ और घोड़ों को लाने के लिए दो लाख रुपये अधिम दे दिया ।

इस घटना के कुछ समय बाद राजा ने मन्त्री में भंडी से कहा कि अपने राज्य के एक ही मूखों की सूची तैयार कर दिखाओ । मन्त्री ने मूखों की सूची तैयार करके राजा के हाथ में दी । मन्त्री पढ़ते-पढ़ते राजा के धर राजा ने ज शब्द में आकर रुक-इस सूची में मेरा नाम क्यों जोड़ा गया है ?

“ महाराज, अरब के अजन्मी सौदागरो को दो लाख रुपये अधिम देकर भेजने में बड़ा मूखता गया हो सकती है ? ” मन्त्री ने कहा ।

“अगर वे लोग घांसे लं जावे लो ? ” राजा ने पूछा ।

तब उस सूची में से आपका नाम काटकर उनके नाम काटि जायंगे ” मन्त्री ने अंत जवाब दिया ।



अनोखी दोस्ती

एक गाँव में गोविंद और रामदास नामके दो दोस्त थे । मगर उनकी दास्तानें निश्चल न थीं । कभी बढ़ती तो कभी घटती । उन्हें अपनी इस तरह की दोस्ती से प्रसन्नता न थी । लेकिन वे यह नहीं जानते थे कि उनकी दोस्ती को स्थिर बनाने के लिए क्या करना चाहिए ? आखिर वे दोनों एक निर्णय पर पहुँचे । वह यह कि दोनों के बीच किसी प्रकार का झुंझाव न रहने के लिए भगवान के सामने शपथ ली जाय ।

इस वास्ते वे दोनों काशी के लिए रवाना हुए । रवाना होने के पहले गोविंद ने अपना पत्नी द्वारा पसोटी और लड्डू बनवाय । इसी तरह रामदास ने अपनी पत्नी से धी की पूडियाँ और जलेदियाँ बनवायीं । दोनों अपनी चीजें लेकर राह-खर्च के साथ घर में निकल पड़े ।

दोनों दुपहर तक चलकर जब एक गये तब किसी पेड़ की छाया में आराम करने बैठ गये । दोनों भूख में परेशान थे । फिर भी उन लोगों ने अपने खाने की पोटलियाँ नहीं खोलीं । गोविंद ने सोचा कि रामदास सूखी रोटियाँ खाया होगा, उसे नाहक अपना पराठे और लड्डू क्यों दिये जाय ? इसी तरह रामदास ने सोचा कि गोविंद दही-भात खाया होगा, उसे नाहक धी की नती पूडियाँ और जलेदियाँ क्यों दी जायें ?

भूख से उनकी आँखें चकरा रही थी फिर भी दोनों खाने की कित्ति किये बिना शाम तक चलते रहे । शाम को जब अंधरा फैल गया तब रास्ते के किनारे एक लकड़े मंदिर को देख वहाँ पहुँचे और वहाँ पर दोनों आराम करने लगे । मगर दोनों को भूख के बारे में सोच न आसी । दोनों ने



गोविंद में उस पोतकी को दूर फकाते हुए कहा- 'मेरी पत्नी कभी जातिम औरत मालूम होती है, घर पहुँच जाऊँ तो उसकी हड्डियाँ तोड़ दूँगा उसने मेरे साथ वगा किया है।

खोजी भी १५५५ की वन ५५५५
हो गया इसके बाद तैना न पम प्रा
लौटे । घर पहुँचते ही ज्ञान न श्रमना
अपनी पत्नी को हथ पीटा ५५५५

जब गोविंद और रामदास काशी के लिए रवाना हुए तब उन्हें खाने की पोटकियाँ दत्ते हुए उनकी पत्नियाँ अपने अपने पतियों से बोलीं: 'काशी की यात्रा करनेवालों को रास्ते भर सदन-धर्म करना'

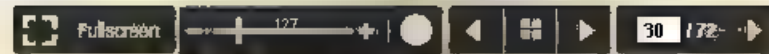
रामदास का दिया हुआ पराठा मंड में रखते ही गोविंद की पौध जल गयी, वही वक्त रामदास गोविंद के दिये हुए पराठे खाकर की करते लगा।



रामदास के पराओं में मिर्च खास पड़े थे और नमक बिलकुल न था।

गोविंद के पराओं में नमक ही नमक था और मिर्च बिलकुल न थी। गोविंद "मिर्च मिर्च" चिल्लाते रामदास पर दूढ़ पड़ा। रामदास 'नमक नमक' चिल्लाते गोविंद की मारने दीड़ा। दोनों में मारपीट होने लगी। तब उस रास्ते चलनेवाले एक बुजुर्ग ने उनको रोका और पूछा—'तुम दोनों लड़ते क्यों हो?'

"महाकाय हम दोनों इस बात की शपथ करने के लिए काशी जा रहे हैं कि जिनकी घर पर हम दोनों प्राण मित्र बनकर अपना दोनो घर में खान को सजाया खाया भूल लगते हैं। तब तब अपना अपना पोटली खोला दा-अपना हा दलिय कि मुझे खाने के लिए उसने कैसी चीज दी है! क्या एक मित्र दूसरे मित्र के साथ ऐसा अन्याय कर सकता है?" इस तरह दोनों ने एक दूसरे की चिकाचक की।



चीजें मेरे हाथ दो।" भौं कहते उस बुजुर्ग ने दोनों की दी हुई चीजें एक-दूसरे थोड़ा-थोड़ा खखकर देखा और कहा— "अरे, इसमें मुझे कोई खर बा दियाई नहीं देती। लेकिन बात यह है कि इन दोनों चीजों को मिलाकर खाया जाएगा। खम, यही बात! अरे पगल! दासों की भी यही बात है! दोनों के हाथ 'मिर्च' चाहिए। ऐसा न होकर असमान के सामने शपथ लेने से क्या फायदा? लगाना है कि तुम लोगों से तुम्हारी पत्नियाँ क्यादा अवगत हों। अतः तुम लोगों को जो सबक सखाया वह तुम लोगों की खापन में आये तो तुम दोनों अच्छे मित्र बन रहे सकते हो।"

बुजुर्ग की आज्ञा सुनते पर गोविंद और रामदास अपने-अपनी मखाना पर लौट पड़े। इसके बाद काशी की राया करने का विचार त्याग कर अपने-अपने घर और अपने-अपने रहने लगे।



उड़न खटोला

[५]

शहजादी पद्म ने देखा कि कारवां का गाँव में रुक गया। गाँव के लोग भी आकर वहीं खड़े हो गए। तब उगल बह पाँवों से पछा। तुम्हारे माँक ने तुम से क्या बताया? और तुम यह क्या कर रहे हो?"

बुढ़ ने हाँकर कहा— "गोरा माँक? कौन है गोरा माँक? क्या हम कमरान अकबर के बर मरत नह कह रही हूँ? वह एक रंग बेहूदा लडका है।"

अर बुढ़! तुम अपने बालिक के बार माँक अभी नाँवें कहते हो?" वम्स बल मल ने पूछा।

वह मेरा बालिक नहीं है, क्या तुम जानते हो कि मैं कौन हूँ? बुढ़ ने कहा।

म क्या जानूँ, उन कौन है? शहजादी ने कहा।

तुम्हें और उगल बह पाँवों के लिए मेरे बालिक को खाने में रुक गया है। रुक कर कुछ अनजानीय बातें कह रहा है, मेरा घाड़ा माँक खापन में लगा है अब उसे कुठकर भर जाने दो। तुम चिता मत करो। उस कमबल से मैं सब प्रकार से बोलूँ। शक्तिवाली हूँ, बनी हूँ दाता हूँ। मेरे गुलाब और नौकर भी तुम्हारी सेवा ऐसे ही करेंगे जैसे मेरी सेवा करते हैं। मैं तुम्हें ऐसे ऐसे आभूषण और बस्त्र दूँगा जो कोई भी राजा तुम्हें नहीं दे सकता। तुम्हारी हर इच्छा की पूर्ति करूँगा।" बुढ़ ने कहा।

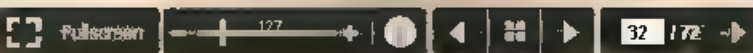
शहजादी अपना सर पीटकर रोते हुए बोली— "यह मेरी बदकिस्मती है कि मैं अपने माँ-बाप से तो दूर हो गयी, फिर अपने प्रियतम से भी दूर हो रही हूँ।"





अब न तोड़ को उगि नाग की ओर बढ़ाया। जहाँ लोगों में जादू का वह अद्भुत हुक्मशान के सब सजा नगर के बाहर सेवन था। उनका उस मैदान में भूदर पर और जान था।

उसके बाद नगर का शासक उस बड़े हुए मैदान में नगर के बाहर सेवन हुए ठण्ठी हवा का सेवन कर रहा था। उसने बड़े युवती और जादू के घोड़े को वेला और अपने गुलामों को उन्हें पकड़ लाने का आदेश दिया। उन लोगों ने जवानक बड़े पर हमला किया, उसे बड़ी बनामद शहजादी और जादू के घोड़े को लाकर सुल्तान के सामने रखा।



यह था पकड़ रूप दल गुलामों का चेहरा घूणा से भर उठा। सुल्तान ने शहजादी से पूछा—“सुंदरी तुमको इस विकृत व्यक्ति के सके सड़नेवाले तुम्हारे माँ बाप कैसे क्रूर होने?”

“यह युवती मेरी औरत ही नहीं बल्कि निकट की रिश्तेदारिन भी है।” बूढ़े ने तुरंत सुल्तान से कहा।

इसपर शहजादी ने खफा स्वर में कहा—“बर्हानाह, अल्लाह की कृपम! मैं सी माल के इस बूढ़े की जानती तक नहीं हूँ यह मेरा बौद्ध नहीं है। कोई जादूगर है। शूट टालका दगा देकर जरईमती वह मुझ उग गया है।”

यह बात सुनते ही सुल्तान ने उस बूढ़े को पंढन का जालें गढ़ाया को आदेश दिया। गुलामों ने उसे पकड़कर अधस्ता अन दिया। थक जाते सुल्तान ने बूढ़े को तंगर में ठाकर कचरी को म यत्नी बनाया। नगर का जादू के घोड़े और शहजादी की न गुलामों राजमदन में पहुँचा। मगर सुल्तान उस जादू के घोड़े के रहस्य को नहीं जान पाया।

अपनी प्रेयसी को छोड़कर बूढ़े का कमर थाड़ी की पोशाकें पहने आवश्यक साधन-साधन साथ से शहजादी की नगर में ले गया। वह वनन दगा को पार करत

कमर का धुम लोगों ने जादू के घोड़े को देखा है?” ने लोग यही सोचते कि यह युवक पायाल हो गया है।

बड़ी मुश्किल से कई महीन बीत गए, शहजादा कमर बड़ी सबला के साथ सबसे शहजादी का दरिपापत करता गया। मगर किसी ने उसे शहजादी के बारे में सही समाचार नहीं दिया। आखिर कमर अपने मामा के नगर सवा में पहुँचा। वहाँ पर भी उसे घमस का पता न लगा। उसे शहजादी के बाप को परेजान देख वह भी कुछ भी न हो गया। वहाँ से लफा बहककर अखिर कमर तुकिस्तान में जा पहुँचा।

वह एक सराय में ठहरा था। एक दिन कुछ सौंदर्य अंशम से के व वृत्तन कर रहे थे। उनके समीप में बैठ कमर के कान में एक परिचित स्वर पड़ी। एक सौंदर्य तुरंत मोहपाग में बड़ रहा था—“मैंने अमल नगर में एक समाचार सुना है। राजा ने एक मैदान में नगर के सब जावन एक बूढ़े और उसके साथ एक सुंदर युवती को देखा। उनके साथ हाथी दाँस और घोड़े लकड़ी से बनाया गया एक वाहन भी था।” यों उसने वह खारी कहानी सुनायी जो उसने सुनी थी।

बन्यामामा



कमर को जिस समाचार की जरूरत थी, बहुत रित बाद वह समाचार मिला। उसने वन लोगों के द्वारा उस नगर को तदरा का पता लगाया और शहजाद नगर में जा पहुँचा। वह नगर में पहुँच कर नगर के द्वार द्वार को हो रहा था। विपादिय न उसे शकत पकड़ा और मे सुल्तान के सामने हाजिर करना पड़ा। क्या कि उस दगा का यह निवृत्त था। कि कोई विदेशी उस नगर में प्रवेश करता है, तो सुल्तान उसका पूरा समाचार जान लेता था।

लेकिन अंधरा हो चला था, इसलिए उस रात को सिपाहियों ने कमर को



कारागार में रखा। उसे खाना दिया। तब सिपाहियों ने पूछा—'तुम किस देश से आ रहे हो?' कमर ने जवाब दिया कि वह फ़ारस से आ रहा है।

इसपर सिपाहियों ने हँसकर कहा—'तुम्हारे देश का एक व्यक्ति यहाँ पर आया हुआ है। ऐसे झूठ बोलनेवाले को हमने कहीं नहीं देखा। देखने से यह बड़ा ही भद्दा और डरूप लगता है, वह कहता है कि वंशा ज्ञानी और मशहूर वैद्य है। हमारे सुल्तान ने एक पैदान में उस भूले, एक युवती और हाथी दाँत से नितित एक छोड़े को देखा है। यह युवती अचानक पागल हो गयी है। बरना हमारे

लिए हमारे सुल्तान ने कई नर्तक और बच्चों को मूला भेजा है। काफी धन भी खर्च किया है। वह बूढ़ा मचमुच वैद्य होता तो क्या उस युवती का इलाज नहीं कर सकता था? हाथी दाँत के धूल को सुल्तान ने ज्ञान में रखवा दिया है बूढ़ा जेलखाने में है। वह रत भेष कराहता है। हमें सोने नहीं देता।

कमर ने तब सोचा कि वह गरीब जगह पहुँच गया है। तब उस एक वंश के सिपाहियों ने तब कहा—'तुम कमर के पहुँचते ही कमर ने सुना कि कोई फ़ारसी में बड़बड़ा रहा है।

'यह मेरे पुत्र का कहना था कि सोच नहीं पाया' वह प्यारी युवती मेरे हाथ से निकल गयी है' म लाम से आ गया "

यह बात सुनते पर कमर ने भाप किया कि विलाप करनेवाला व्यक्ति जरूर तो फ़ारस का पंडित होगा। उस फ़ारसी में ही उस व्यक्ति से पूछा—'तुम का क्या है?' क्या तुम यह मानते हो कि सत्कार में तुमसे बड़े पर अभाग कोई मनु है?

युवती को लगा कि माना 'मर्दा तार में जान आये हो' उसने वंश की अपनी तारी कहानें सुन कर अपने दिल को

अन्धामास

कमर को तहाँ पहुँचाना जान भग वे सोना अन्ध पित्र की सति वार्तागत करने है

दूसरे दिन सबार मिर्गना कमरल अक्बार को सुल्तान के पास ले गये और निवेदन किया—'हुजूर! यह युवक कल बड़े गढ़ गये नगर में आया इसलिए हम उसी वक्त आपकी सेवा में हाजिर नहीं कर सके'

तब राज ने तब ही? मुल्तान तब क्या है? तुम्हारा पेशा क्या है हमारे देश में किस तरह से क्या है? मुल्तान ने पूछा

मुझ हर्ता कहने में फ़ारस का बाधित है। क्या पेशा उल्लास करने का है? क्याकर से पारंगत का अक्ल इतने कम है? माय देश घुमने हुए इतने ज्ञान से अन्ध प्रज्ञा करने है वंश कहने पेशा उपाय वंशत तार में मायाएँ खोले करना बड़ी बड़ी पोरधियाँ बगल में साथ कर लोग रचना में पसद नहीं करता हूँ। मान नथ किये बिना ही मैं इलाक़ कहने है वंशत समझाया।

इस पर सुल्तान बड़ा लज्जा हुआ और बोला—'तुम ठीक वक्त पर आये हो। हमारे यहाँ पर युवती बाबली हो गयी



है। उसका पागलपन दूर करोगे तो तुम्हें मुँह भांगी भुगत मिलेगी।"

"अल्लाह हुजूर पर य़हरवान रहे! पहले थाप मूक यह बताइये कि वह युवती कैसे बाबली हो गयी? कितने दिनों से यह पागल है! साथ ही उस बूढ़े और घोड़ा का भी पूरा हाल बताला दीजिये।" कमर ने पूछा।

सुल्तान ने प्रारम्भ से सारी कहानी सुना कर कहा—'मेने बूढ़े की काँटी में बंध करवाया है। घोड़े को ज्ञान में सुरक्षित रखवाया है।"

कमर के मन में एक बार घोड़े को देखने की उच्छा हुई। यदि वह मर्दो

अन्धामास

31

हालत में रहा तो उसका काम ज्यादा सरल होगा। अगर बाढ़ों में कहीं सोढ़-फोड़ हो गयी हो तो उसे अपनी बेमती की रक्षा के लिए कोई दूसरा उपाय सोचना होगा।

ये सारी बातें सोचकर कमर ने सुलतान से कहा—“मुझे एक सार उस थोड़े की धींच करनी होगी। इससे इलाज करने में कहीं सहूलियत होगी।”

“ऐसा ही करेंगे,” यों कहकर सुलतान कमर को खजान के पास ले गया। कमर ने उसकी आज्ञा करके जान लिया कि थोड़े के सभी धन अच्छी हालत में हैं, एवं खुशी में आकर बोले—“अब मैं उस युवती की आज करके उसकी बीमारी का

की मेहवर्ति हो तो मैं उस युवती को बीमारी को दूर कर सकता हूँ। इसके लिए उस थोड़े की जरूरत पड़ेगी। इसलिए आपके सिपाहियों की चाहिए कि वे हम थोड़े की अच्छी तरह से हिफाजत करें।

इसके बाद सुलतान कमर को उस युवती के कमरे में ले गया। वहाँ पर वह युवती छत्ती पीटने, कपड़े फाड़ने बिछावें थी। कमर ने बंदाख लगाया कि शायद वह युवती पागल नहीं है, बल्कि वह पगल हो जाने का अभिनय कर रही है।

कमर ने सहजादी के निकट जाकर कहा—“सहजादीजी, तुम्हारी सभी तकलीफें दूर हो जायें।”

सहजादी ने भी गुप्त रूप से कहा—“अच्छा बात है।” तब कमर तब पर खड़े सुलतान के निकट जाकर बोला—“हृष्टर! आपकी महबूबी से इस युवती की बीमारी का इलाज किया। वह कौर से चिल्ला पड़ी और यह कहते हुए गिर पड़ी। सुलतान ने तब कि हकीम को देख कर के मारे वह युवती बंदाख हो गयी है। कमर उस युवती को दवा में लाया, तब गुप्त रूप से उसके कमरे में कहा—“मुझे कुछ सज करो। हम दोनों खतरे में हैं। सुलतान के सामने पद अभिनय करो कि पिशाच ने तुम्हें छीन दिया है।”

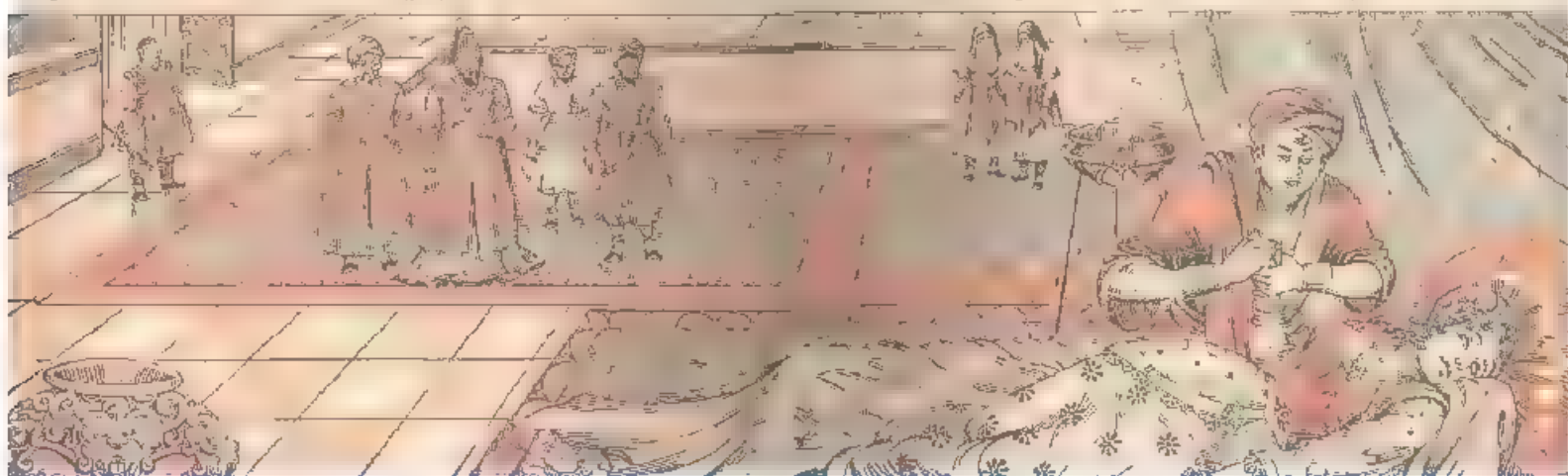
सहजादी ने भी गुप्त रूप से कहा—“अच्छा बात है।”

तब कमर तब पर खड़े सुलतान के निकट जाकर बोला—“हृष्टर! आपकी महबूबी से इस युवती की बीमारी का

और से पता लगाया और उसका इलाज भी कर दिया है। आप उसके पास जाकर स्नेह से परामर्श कीजिये। साथ ही आप उसकी जिन जिन इच्छाओं की पूर्ति करना चाहते हैं, उन्हें पूरा करने का आवासन भी दीजिये। इसके बाद सब कुछ आपके अनुकूल होगा।”

सुलतान सहजादी के निकट पहुँचा। सहजादी ने उठकर सुलतान को सलाम करके कहा—“आपके आगमन से मैं धन्य हो गयी हूँ।”

तब युवती में ऐसा परिवर्तन देख सुलतान खुशी के मारे फूला न समाया। उसने अपनी गुलाम वीरतों और खोजाओं को तुरंत आदेश दिया कि





शाहजादी का शानदार मंजूर मंगल महान्दाय और उसे कीमती तम्र तथा आभरण पड़ना । ग्याम औरता व गुना हू किया।

इसके बाद मुलतान न कमर न वह । हमस मोह्य मुमर हमारा बडा अपकार किया । अल्लाह की मेहरबानी तुम पर हमेशा बनी रहे । ”

“हमूर! यदि यह खुशी आप हमेशा के लिए बाहे तो आपको चाहिए कि आप इस सुंदरी और घोड़े को साथ ले अपने परिवार सहित उस प्रवेश में पहुँचे, जहाँ आपको व दोनों प्राप्त हुए थे । उसकी आस यह है कि वह घोड़ा एक

करके इसे पागल बना दिया । मैं उस प्रदेश में शैतान की भगत का यत्न करूँगा । अगर वह शैतान गिर में उससे प्रवेश कर सकता है । अलावा इसके हर महीने के प्रारम्भ में जंगल इस मुदरा में प्रवेश करता रहेगा और हर बार उसे भगाना पड़गा । इसलिए उस शैतान को हमेशा के लिए अंद करना ठीकन होगा । कमर न समझाया ।

“यह कौन मुक्ति का बात है ? ऐसा ही करो । ” मुलतान ने कहा ।

इस पर मुलतान अपने दरबारियों लोकर कमर शहजादी तथा घोड़े को साथ ले उसे वक्त में दान की आर बल पडा ।

भेदत में पहुँचने ही कमर ने उड़त खेतों को बहुत दूर से जाकर रखा । उस पर शहजादी को चढ़ाया तब कहा- “हमूर का हुक्म हो तो मैं मैं इस घाट पर सवार हो शैतान के द्वारा उस घाट को आप तक बलाऊँगा । ”

“वाह, कैसा बद्धुत है ! ” मुलतान ने मन में सोचा ।

कमर भी उड़त खेतों पर बैठ गया वपने पीछे बैठी शहजादी की रस्मी से कसकर बांध दिया । तब वहाँ दवाया

मुलतान समझ न पाया कि क्या हो गया है । वह इस विचार से दुपहर तक अपने परिवार के साथ वहीं रहा कि वह मुदरी और तैल लौट आया । इसके बाद वह अपने परिवार को के राजमहल की आवा, वहाँ पर भी उसने शहजादी तथा घोड़े का इंतजाम किया, पर उन दानों का कहीं उता ही न था ।

इतने में उसे बूढ़े सैदी का स्मरण आया तब बूढ़े को बुलाकर डाँटा-“अरे बदमाश ! तुमने मेरे मे पहुँचाने क्या लिखाया कि मैं था कि अन्दर पेशाब है । अब वह मिशान इकोम और अदभत सदरा का भी उडकर कहीं न गया है । बहरा उन पर न मालूम क्या कीला ? इस अपराध पर अभी मैं तुम्हारा भर उडवा दंगा । मुलतान का आदेश मिलते ही उसके गुलामान बूढ़े के सर को छड़ में अलग कर डाला ।



उड़त खेतों पर कमर शहजादी के साथ सकुशल अपने नगर को लौटा और राजमहल के छत पर आ उतरा । शोक सागर में डूबा हुआ मुलतान का परिवार खुशी में भर उठा । इसके बाद मुलतान सागर ने अपने पुत्र के दिवङ्ग के स्मरण में अनेक दिन तक उन्मत्त प्रताप भविष्य में कोई खतरा नहो इस तबाल से सागर ने खुब अपने हाथों से उड़त खेतों का नाश दिया ।

कमर ने अपने समुद्र की भासा धमाच र सूचित करते हुए चिट्ठी लिख दी और अनेक पुरस्कारों के साथ उस चिट्ठी को हुता के द्वारा उसके पास भिजवा दिया ।

कुछ समय बाद मुलतान सागर का देहान्त हो गया तब कमर मुलतान वन देश गला पर बैठा ही कमर ने अपनी उड़त देह की आधी अपने मरने के साथ कर दी । इसके बाद कमर तीर दस बल गहर मुखपुत्रक अपने दिन दिवान गया ।

(समाप्त)

एक गाँव में एक बगीचा था। वह इन्दल झरों का कंकुत था। सं पेट पर खाना लाना था और तन पर पर्याप्त कपड़ा ही पहनता था।

एक दिन त्यौहार पड़ा। घर के लौकर ने अपने शानिक के तन पर पुराने कपड़े देकर पूछा—“माविक, आज त्यौहार का दिन है। पुराने कपड़े क्यों पहने हैं? नये कपड़े क्यों नहीं पहन लेते?”

“जरे सोचू इस गाँव में मुझे कौन नहीं जानता? मैं नये कपड़े न पहनूँ तो भी कोई नारा नहीं।” कंगीर ने जवाब दिया।

लौकर ने बोला कि उसका शानिक एक नरक का कंकुत है और वह सोच रहा था कुछ दिन बीत गये। एक दिन अमीर पड़ोसी गाँव में वाले हुए लौकर से बोला—“सोचू, मैं गाँव हो आता हूँ। घर की देखभाल अच्छी तरह से करना।”

“शानिक दूसरे गाँव में जाते बच्चे भी पुराने कपड़े पहनकर क्यों जाते हैं?” लौकर ने पूछा।

“जरे पसले! वहाँ पर मुझे जानता ही कौन है। चाहे मैं भी भी कपड़े पहनूँ, बरबर है।” अमीर ने बाड़ा।



चन्द्रमानु

खुशगूर पर राजा उदयमानु राज्य करता था। उसकी पत्नी का नाम रूपमती था। उसे दंपति के बहुत समय तक कोई सन्तान न हुई। संतान के वांछने उस दंपति ने अनेक उपवास किये, देवताओं की पूजा की। साधु-सत्यासियों की सेवा की, मगर उस कोई सन्तान न हुई।

आखिर लावार होकर राजा उदयमानु ने अपनी पत्नी के साथ की अर्धे रात्र में लाव या नामक एक सुंदरी के साथ दूसरा विवाह किया। लावण्या के सौंदर्य पर मुगल राजा अपना चारा सनम उसी के साथ बिगान लगा, बड़ी रानी रूपमती के पाम मदन से सिर्फ दो तीन बार जाया जाता था।

राजा ने लावण्या के साथ विवाह किये दो साल बाद मगल, मगर लावण्या के कोई सन्तान न हुई। पर इसी बीच बड़ी रानी

किन्हीं बड़ी नूटियों की मदद से गर्भवती हुई और उसने एक सुंदर पुत्र का जन्म दिया। राजा इस पर बड़ा प्रसन्न हुआ और उस शिशु का नामकरण चन्द्रमानु किया। रूपमती ने सोचा कि उसके दिन फिर गये हैं।

मगर बात ऐसी न हुई। क्योंकि लावण्या ने राजा को अपना दास बना लिया था। इसलिए राजा उसकी हर बात का पालन करता था। उसकी इच्छा के विरुद्ध कुछ भी नहीं कर पाता था।

लावण्या रूपमती ने ईर्ष्या काली की इस कारण उसने राजा को समझाया कि रूपमती कोई जादूगरनी है और उसने मंत्र और मंत्रों की मदद से पुत्र का जन्म दिया है। लड़का बड़ा होत पर राज्य के लिए खतरा बन सकता है! जिस राजा ने सन्तान के वांछने अनेक उपवास किये,

एक गाँव में एक बगीचा था। वह इन्दल झरों का कंचुल था। सँघट पर खाना लाना था और तन पर पर्याप्त कपड़ा ही पहनता था।

एक दिन त्यौहार पड़ा। घर के लौकर ने अपने शालिक के तन पर पुराने कपड़े देकर पूछा—“शालिक, आज त्यौहार का दिन है। पुराने कपड़े क्यों पहने हैं? नये कपड़े क्यों नहीं पहन लेते?”

“जरे खोम् इस गाँव में मुझे कौन नहीं जानता? मैं नये कपड़े न पहनूँ तो भी कोई नारा नहीं।” लौकर ने जवाब दिया।

लौकर ने शोचा कि उसका शालिक एक नरक का कंचुल है और वह मौन रह रहा। कुछ दिन बीत गये। एक दिन अमीर पड़ोसी गाँव में बाते हुए लौकर से बोला—“खोम्, मैं गाँव हो आता हूँ। घर की देखभाल अच्छी तरह से करना।”

“शालिक दूसरे गाँव में जाते बच्चे भी पुराने कपड़े पहनकर क्यों जाते हैं?” लौकर ने पूछा।

“जरे पगले! वहाँ पर मुझे जानता ही कौन है। चाहे मैं भी भी कपड़े पहनूँ, बरबर है।” लौकर ने बाधा दी।



चन्द्रमानु

खुशगूर पर राजा उदयमानु राज्य करता था। उसकी पत्नी का नाम रूपमती था। उसे दंपति के बहुत समय तक कोई सन्तान न हुई। संतान के वांछने उस दंपति ने अनेक उपवास किये, देवताओं की पूजा की, साधु-सत्यासियों की सेवा की, मगर उस कोई सन्तान न हुई।

शालिक लावार होकर राजा उदयमानु ने अपनी पत्नी के साथ की अर्धे रात्र में लाव या लामक एक सुंदरी के साथ दूसरा विवाह किया। लावण्या के सौंदर्य पर मुगल राजा अपना चारा सनम उसी के साथ बिगान लगा, बड़ी रानी रूपमती के पाम मदन से सिर्फ दो तीन बार जाया जाता था।

राजा ने लावण्या के साथ विवाह किये दो साल बाद मगल, मगर लावण्या के कोई सन्तान न हुई। पर इसी बीच बड़ी रानी

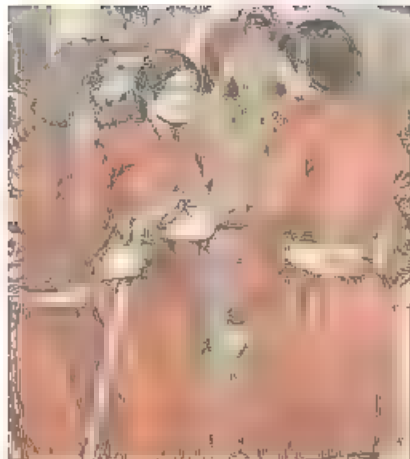
किन्हीं बड़ी नूटियों की मदद से गर्भवती हुई और उसने एक सुंदर पुत्र का जन्म दिया। राजा इस पर बड़ा प्रसन्न हुआ और उस शिशु का नामकरण चन्द्रमानु किया। रूपमती ने सोचा कि उसके दिन फिर गये हैं।

मगर बात ऐसी न हुई। क्योंकि लावण्या ने राजा को अपना दास बना लिया था। इसलिए राजा उसकी हर बात का पालन करता था। उसकी इच्छा के विरुद्ध कुछ भी नहीं कर पाता था।

लावण्या रूपमती ने ईर्ष्या काली की इस कारण उसने राजा को समझाया कि रूपमती कोई जादूगरनी है और उसने मंत्र और मंत्रों की मदद से पुत्र का जन्म दिया है। लड़का बड़ा होत पर राज्य के लिए खतरा बन सकता है! जिस राजा ने सन्तान के वास्ते अनेक उपवास किये,



मैंने देखा कि जनता को राजा के शासन से कुछ बेकायदा। राजा उदयमान तथा एक पारलत पुत्र के प्रीत में जनता की बाँट सदावाचन नही दरबार क प्रमुख व्यक्तिन न अथ चद्रमान क मीन से यह



घोषणा सुनी कि वही राजगद्दी का शरित है, तब जनका उत्साह समझ पड़ा।

चन्द्रभानु ने नगर के प्रमुख व्यक्तियों से मिलकर उन्हें अपना साथ दत्ताई सुनाया, तब उन लोगों ने चन्द्रभानु से कहा—

“भुवराज, तुम हमें इस दृष्ट शासिका से उबारो, हमारा समर्थन तुम्हें प्राप्त होगा।”

उन सब की साथ ले चन्द्रभानु दूसरे दिन दरबार में पहुँचा। वह अपने साथ सब वस्त्रों की भी ले आया जो बचपन में बंगाल में भेजते समय उसके बारीर पर पहुँचाए गए थे। उन वस्त्रों को लावण्या के सामने रखकर चन्द्रभानु ने कहा—“लीजिय, ये ही मेरे बचपन की पोशाकें हैं।”

जा जान के बाद किसी ने इन पोशाकों को सुरक्षित रख लिया होगा।” लावण्या ने कहा। नगर के प्रमुख व्यक्तियों ने गलाहली—“महारानी जी, यह जांच कर देख लीजिय, कह अब राजा और रानी इसे पहचान लें।”

राजा उदयभानु और रानी चन्द्रभानु को देख उसे पहचान नहीं पाये। इस पर लावण्या ने चन्द्रभानु से कहा—“ये वधेवाज! तुम्हारी पोश कुछ गयी है। अब तुम्हें कुछ दण्ड भुगना पड़ेगा।”

तब दरबार में जादूगारिता करने वाले चन्द्रभानु को उचित नष्टा दी जायित मही माँ और बड़े हैं कि नही। यह वचन के लिए एक प्रक्रिया है। माँ का दूध एक तालाब में एक छोर पर डाल कर तालाब के दूसरे छोर से जेटा एक घड़े में पानी भर दे तब उपर के पानी में माँ के दूध की बाँधी दिखाई देनी चाहिये। इसलिए इसका जांच करने के लिए आप लोग रानी करवाने। दूध तालाब के एक छोर में डरवा दीजिये, चन्द्रभानु से कहिये कि वह तालाब के दूसरे छोर घड़े में जल भर दे। यदि वे दोनों सचमुच माँ और बेटे हैं, तो माँ का दूध घड़े में बहुत आप आ जायेंगे।

उसने उसके मुझीब को मान लिया। लेकिन उसने एक बात रखी—“यदि इस परमा में यह सूचक सफल न निकला तो उसे मृत्यु दण्ड दिया जायगा।”

उसने फिर से नंगा हुआ। चन्द्रभानु ने स्वागत किया।

इसके बाद परीक्षा के लिए आवश्यक सारी तैयारियाँ हो गयीं। दो दिन बाद राजमण्डल के तालाब के पास लोगों की भीड़ लग गयी। तब चन्द्रभानु के दूध का नमूना के एक छोर पर डाला गया। दूसरे छोर पर चन्द्रभानु एक खाली घड़ा लेकर तालाब से उतरा। उसने उस घड़े को पानी से धोया और धाड़ी दर में पानी भर कर वहाँ आया। उस पानी को दूध जैसा देख सब लोग विस्मय में आ गये।

नगर के प्रमुख व्यक्तियों ने यह निश्चय कर लिया कि चन्द्रभानु ही रानी कपमनी

का पुत्र और गद्दी का शरित है, तब लावण्या से कहा—“जब तुम गद्दी से उतर सकती हो। हम चन्द्रभानु का राज्याभिषेक करेंगे।” उनके निर्णय को लावण्या को भी स्वीकार करना पड़ा।

चन्द्रभानु ने घड़े में दूध कैसे भरवा दिया? उसने एक गन्ध काढ़ने के टुकड़े का जोर रात दूध में डाला। रात दूध के सूत जाने पर फिर कुत्तों करके उसे सुलाया और उस टुकड़े को अपनी कमर में छोस लिया था। अब वह खाली घड़े को घोंस का अभिनय करने लगा, तब उस टुकड़े को घड़े के पानी में डाल कर लूव हिलाया जिससे पानी में दूध का रंग आ गया। तब उस टुकड़े को पानी में डाल कर अपने पैर से मिट्टी में दबा दिया। इसके बाद घड़े में पानी भरने का अभिनय करके किनारे पर आ गया। सब ने सोचा कि तालाब के दूसरे छोर पर जल गया दूध घड़े में आ गया है। इस तरह उसकी धूर्ति सफल हो गयी।





कुत्तों का सौदा

पाँच सौ साल पहले हुनेरी में मात्यास नामक एक अमीर राजा शासन करता था। उन दिनों में राजधानी से थोड़ी दूर पर एक गाँव में एक अमीर रहा करता था। दूसरों को बड़ी सरलता से बोझा देने की प्रवृत्ति उसकी जन्मजात प्रतिभा थी। झूठ बोलकर अपने मित्रों व परिचितों को बग़ा बेठा और वे लोग उसकी बातों में आकर बोझा खा जाते, तो वह बड़ा प्रसन्न होता। यह उसका नित्य का काम था।

एक बार वह अमीर राजधानी में गया। कोई सौदा करके थैली भर सोने के सिक्कों के साथ गाँव में लौट आया। वह गाँव के हर किसी से यही कहता गया कि उसमें राजधानी में कुत्तों बेचकर इतना धारा सोना कमर लिया है और राजधानी में कुत्तों की बड़ी माँग है।

गाँव के एक गरीब आदमी ने यह बात किसी दूत के मुँह से सुनी। तो उसके मन में यह आशा पैदा हो गयी कि वह भी थोड़ा-बहुत सोना कमा ले, क्योंकि यह सीधा ही उसके लिए भारी त पड़ेगा। यह सोचकर वह गरीब अमीर के घर पहुँचा और पूछा—“साहब मैंने अमुक बात सुनी है, क्या यह सच है?”

“हाँ बेटे! बिल्कुल सच है। राजा मात्यास अधाभुष कुत्तों को खरीदता जा रहा है। अच्छा भान दे रहा है। यह बात मेरे कानों में पड़ते ही मैंने बिना किसी से कहे अपनी सारी पूँजी लगाकर कुत्ते खरीद लिये और राजधानी में ले जाकर राजा के हाथ अच्छे भाव पर बेच दिये। मुझे एक थैली-भर सोना हाथ लगा है। बेचारे, तू गरीब हो! तू भी राजा के हाथ कुत्ते बेच दो।” अमीर ने कहा।

कमाने का लोभ पैदा हो गया मगर उसके पास पूँजी के नाम एक कौड़ी भी नहीं है, कोई चीज़ बेचकर भी धन इकट्ठा करना चाहे तो उसके पास सिवाय सूखकर काँटा बनी गाय के कुछ नहीं है। फिर भी वह ऐसे अच्छे बीक्रे से हाथ धोना नहीं चाहता था इसलिए अपनी उस कमज़ोर गाय को बेचकर थोड़े से कुत्ते खरीद लिये, उनके गल्ल में दस्निया बाँध राजधानी की ओर चल पड़ा।

गरीब राजमहल में पहुँचा, लेकिन पहरेदारों ने उसे भीतर जाने नहीं दिया। सब उसकी समझ में आया कि अमीर से

उसके साथ घोंछा दिया है और उसे खूब बचकप्यताया है। उस दिन जब उल्लेखित हुनेरी लया तब बेचारे गरीब को रोना आया और वह रोने लगा।

राजमहल की छत पर से राजा ने देखा कि एक व्यक्ति अपने साथ कुत्तों लिए रो रहा है, राजा ने उसली बात खानती चाही, उसमें अपने सेवक को आदेश दिया कि कुत्तों की साथ लानेवाले व्यक्ति को उसके सामने हाज़िर करे। गरीब ने राजा के सामने उसली बात बता दी कि कौन उसके गाँव के एक अमीर ने उसके साथ दगा दिया है।

राजा को उस गरीब पर बड़ी दया आयी। उसने गरीब से बताया कि यह



वात सच है कि वह कुत्ते खरीदता है। सब गरीब को एक सौ सोन के सिक्के दिखाकर कुत्तों को खुदाया और अमीर का धाम ब पता जान लिया। इस पर गरीब की खुशियों का कोई ठिकाना न रहा। इसने अपने गाँव में जाकर सबको यह बात बतायी और सोने के सिक्के भी दिखाये।

अमीर ने सोचा था कि वह गरीब उसकी बातों पर विश्वास करके सबके सामने बेवकूफ बन जायगा, मगर वह सचमुच कुत्ते बेचकर सोने के सिक्के कमा लाया है। इस बात पर उसे आश्चर्य भी हुआ कि उसने मजाक में जो बात कही, वह सचमुच सत्य निकली।

अब अमीर के मन में भी खूब धन अटोरने का लोभ पैदा हो गया। उसने अपनी सारी जायदाद बँच बाकी, उस धन से हजारों कुत्ते खरीद लिये और उन्हें लेकर राजधानी में जा पहुँचा। बहुत दिनों बाद वहाँ से शाहजादा भी आया। उसने सबकुछ देखा और उसने कहा कि तुमने बहुत ही अच्छा काम किया है। अब मैं भी तुम्हारे साथ आऊँगा।

यह शोरगुल सुनकर राजा ने सच की छत पर से देखा और अपने पहरेदारों का आदेश दिया कि उस व्यक्ति को अपने कुत्तों के साथ अन्दर भेज दे।

अमीर ने राजा से कहा कि वह कुत्ता का सौदा करने आया है। अमीर का नाम सुनते ही राजा ने समझ लिया कि इसीने एक गरीब को धोखा दिया है। राजा ने अमीर से कहा "मैंने एक ही बार तुम्हें खरीद लिया अब मजा पूरा हो चुकता है। अब तुम्हें अपने कुत्तों के साथ निकल जाना है।"

यह कहकर राजा ने अमीर को राजधानी से निकाल दिया। अमीर ने कहा कि मैं अभी वापस आऊँगा। राजा ने कहा कि तुमने बहुत ही अच्छा काम किया है। अब मैं भी तुम्हारे साथ आऊँगा।



कवि का सम्मान

देवगिरि में एक प्रसिद्ध आशुकि था। वह हर साल अपनी पत्नी को साथ ले किंग न किसी दूसरे राज्य में चला जाता। वहाँ पर तीर्थयात्रा करता। वहाँ के राजा के मन्त्र में पूरा वृत्तान्त जान लेता। राजदरबार में आकर राजा के सम्मान में अपनी पत्नी को भी भेंट करता। राजा को बहुत पसंद आता था।

एक बार वह कवि अमर उतावले में पहुँचा। पति-पत्नी ने नगर के सारे स्थानों को देखा लिया। कवि ने वहाँ पर लोगों के मुँह से सुना कि अमरावती का राजा शासन करता म दश है और कवियों के प्रति आदरभाव रखता है। राजा का पूरा वृत्तान्त जान लेना कवि अपनी पत्नी को भर्त्सना करने लगा। राजदरबार में पहुँचकर राजा को आशीर्वाद

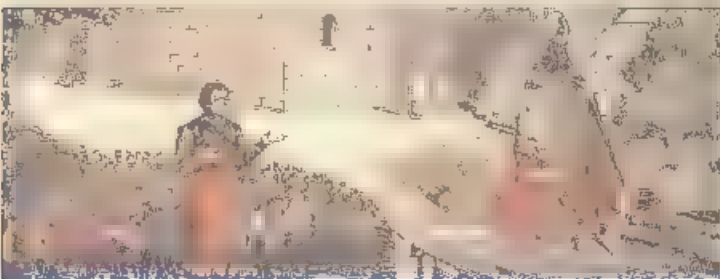
दिया और उन पर आशुकिबत्ता भी रचकर तत्काल सुना दी।

कवि की प्रतिज्ञा पर सृष्ट ही राजा ने पूछा—“क्या तुम अमरावती को अपना निवास बनाओगे?”

“तुम्हें महाराज! मैं किसी भी देश में तीर्थयात्रा के निमित्त ही जाता हूँ। देवगिरि में ही मेरा निवास है। मैं यहाँ ही रहना चाहता हूँ।”

राजा को कवि के वचन में निराशा हुई। उसे अपने देश से एक वैसा भी बाहर जाना कतई पसंद नहीं है। उसका उद्देश्य कि उसका देश स्वयं समृद्ध है। इसलिए कवि को किसी भी प्रकार का पुरस्कार देना राजा को पसंद न था।

किंतु भी अपने प्रति ऐसी सुंदर कविता सुनानेवाला कवि का सम्मान करना राजा का कर्तव्य है, इसलिए राजा ने कवि से निवेदन



किया कि उसका वातिथ्य स्वीकार करे।
कवि ने राजमहल में भोजन किया।
उसके द्वारा सुंदर वस्त्र पहकर सन में ब्रह्मा
निराश हुआ फिर भी प्रकट रूप में
प्रसन्नता का अभिनय किया।

“क्या आपने राजा के कथन किये?
कविता सुनायी उन्हें? राजा ने कौन-सा
पुरस्कार दिया?” कवि की पत्नी ने पूछा।
वह गंभीर होकर पास गया है तब बोले
कवि ने कहा

“यह राजा के पास नहीं है।
पत्नी ने आश्चर्य के साथ पूछा

“नहीं तो मंत्री जी ने विज्ञान तब
उन्हें मंत्र सविनय शिष्टाचार बताया। जो
विल्ला की देव इतने थे इतने मन्त्रालय
चहल पर प्रशस्ति की। य मंत्री वान सुनकर
राजा ने यह नहीं कहा कि मैं कुछ नहीं
व सकता। तब वहाना खिलाधर कपड़े
पकर भोजन दिया कवि ने कहा

“वह खाना भी तो जनता की संपत्ति
है न?” पत्नी ने पूछा।

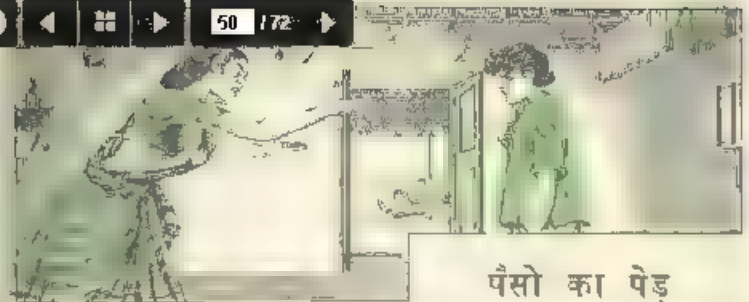


राज्य व्यवस्था राजा के सुतचर थे।
उनके लिए कवि और इसको पत्नी व बीच
को नानाकाय दुष्टा तब समानता थी
राज की भाषा तक पहुंचा।

इस दिन कवि की अपनी पत्नी के
सबसे दोस्तों के लिए वर पड़ा। उनके
बाड़ी हुई देर बाद एक पैल गाड़ी रात में
उन विल्ला की थी गाड़ीवाला ने उनके
आवाजाह तब वह भी देखकर ता रहा है
आज इन दोनों की भाषा पर विचारण।

कवि ने वह पदार्थ के बाड़ी देर बाद
अपराधनी से राजा के दूत वहाँ पहुँच
कथन के साथ एक गाड़ी चलने हुए
वज्र मन्त्राराज ने आपसे पास फलान
हूँ। सिल्ले प्रभुकोर रूपसे भोजन दूँ।
उनकी भाषा तबरी को आज नकार नहीं
के ता सकत थे, इसलिए हमारे द्वारा भोज
दिया है। तब वह वर देता वर नये।

जो वष कवि ने दर्वीगार से असुरावली
के लिए अपना नवरास बदल दिया



पैसे का पेड़

दामोदर का जन्म तब मरा तब दामोदर
ने तब इस साल की जी डबल्लो
उस परिवार पर लड़ो विपत्ति था पड़ी।
फिर जो दामोदर की माँ लड़ी मंदनत
कणक उस पान पायन लड़ी।

दामोदर जब यह हुआ तब उसकी माँ
बड़ी निराश हुई गयी, क्योंकि वह काम काम
कुछ करमा न था उल्टे बकार घुमा करता।
साथ ही वह बड़ा बेवकफ निकला हमेशा
अपनी माँ से पैसे मांगा करता था।

आखिर दामोदर की माँ बीड़ा उठी
और बोली— बेट तब हरशा पैसे मांगत
ही क्या यह सोचने हो कि हमारे मांगत
म पैसे का पेड़ उन आगा है?”

“तब ही मैं वाम करूँगा मैं पैसे
गाड़ दूँगा। पस का पेड़ न्यायक तब पैसे
काहे मैं तब पैस लेंगे दूँगा” दामोदर ने
कहा।

“अरे राजा पैसे लाजत में “शत नहीं।
तुम देश में घमकत इस राज का पता
लगा लो कि पैसे का बीज कहाँ पर
मिलता है?” दामोदर की माँ को धम
अ तब वह

अबोध दामोदर ने अपने माँ की बात
पर धकोत किया और घर में चल पड़ा।
दामोदर ने जो गाड़नायतों में कई
अमार भी थे उनके पान जाकर उनमें
पैसे व पेड़ के वार में गुल्ला

अमीरा ने शगादश के प्रोधान पर
हंसकर मजाक म कहा “अरे पैस का पेड़
यहाँ कहाँ है? जगल में मिलता है।”

दामोदर तब वहाँ पर एकदम बानक
जगल की ओर चल पड़ा। जगल में एक
बड़ी सूखी लकड़िया बीनत उसे दिख ई दो
“तानी पैस के पेड़ का बीज कहाँ
मिलता है?” दामोदर ने बड़ी से पूछ



बूढ़ी ने दामोदर की ओर देखा और कहा—
“बेटा शाम होने की है। थोड़ी लकड़ियाँ
बोन लो जल्दी, बाघ को बता दूँगी।”

उस लुची में दामोदर जल्दी-जल्दी
लकड़ियाँ बोन लगाने लगा। जब शाम हुई तो
बूढ़ी ने दामोदर से कहा—“बेटा मैं
हो गयी हूँ मैं लकड़ियाँ मैं थो नहीं
सकती। खरा, घर पहुँचा दी।”

दामोदर लकड़ियों का गट्टर घर पर
रखकर बूढ़ी के पीछे उसके घर पहुँचा।
“बंटा गाँव में जाकर मैं लकड़ियाँ
बचकर पैसे ले आओ।” बूढ़ी ने समझाया।

दामोदर लकड़ियों का गट्टर लिए गाँव
में गया। लकड़ियाँ बचकर पैसे बना को
ला दिया। इस पर बूढ़ी बहुत खुश हुई।

“सानीजी अब बताओ, पैसे के पट्टे
बीज कहाँ मिलता है?” दामोदर ने बुना
में पूछा।

“अरे समय जान पर मैं ही बता दूँगी,
तुम तब तक सब करो।” बूढ़ी ने
समझाया।



हर राज जग में जाना...
बता जाता...
...का दया गया

दिन सातवाँ बीस महीना बीस पाँच
दामोदर राज गाँव में जाकर, लकड़ियाँ
काटता, उन्हें बचकर बूढ़ी को लाकर देता।

एक दिन बूढ़ी ने दामोदर से कहा—
गट्टरी लाकर दामोदर के हाथ में।
दामोदर के आश्चर्य का बूढ़ी ने
न रहा।

इस पर बूढ़ी ने कहा—“दामोदर ने
बता? मेहनत करने पर मैं वस न करने
हो! मेहनत ही पैसों का बाग है। अब
तुम घर जाओ। मेहनत करके अपनी माँ
का खुश करो।”

उस दिन दामोदर बुना में बिना घर
पर लाकर गया। घर पर जब पैसा के साथ
अपनी बुना की बातें सब देकर उनकी माँ
बहुत खुश हुई।



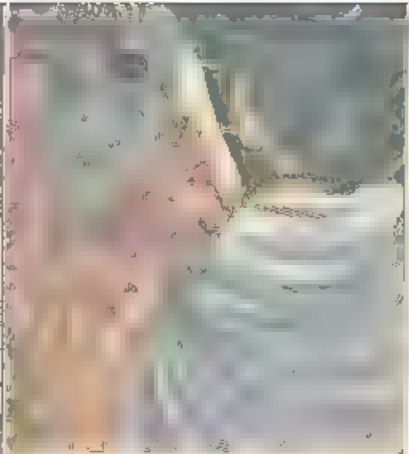
धृतराष्ट्र का कृष्ण ने जो दिव्य दृष्टि
प्राप्त की, उसके द्वारा उसने कृष्ण के
विश्वरूप का देखा। तब उसने कृष्ण से
कहा—“महादेव! तुमने बड़ी कृपापूर्वक मेरे
दिव्य तप प्रदान किया, उन्हें तुम वापस
लौ लो। जिस लंघों से मैंने तुम्हारे रूप का
देखा उन लंघों से मैं साधारण भानव
और इस विश्व को देखना नहीं चाहता।

दूसरे ही क्षण महाभवन प्रवेष्ट हो
गया। कृष्ण भी साधारण रूप में दिखाई
दिया। कृष्ण ने लम्बा में उपस्थित कथियों
से विदा लेकर एक हाथ सात्वती तथा
दूसरे हाथ विदुर के हाथ दिया, और
महाभवन से निकल पड़े। उनके साथ
कोरव तथा अन्य राजा भी चल बड़े।

सभाभवन के द्वार पर दायक रख के
साथ तैयार कराया। कृष्ण रथ में जा
बैठे, तब धृतराष्ट्र ने उनसे कहा—“कृष्ण,
तुम मुझे गलत न समझो। पाँडवों के
प्रति मेरे मन में किसी प्रकार का द्वेष
नहीं है। भले दुर्योधन को तुम्हारे सामने
ही समझाया सभी सभासदों ने भी बुना।”

इसके बाद कृष्ण ने धृतराष्ट्र भीष्म
द्रोण बाह्लिक, कृप इत्यादि बुधुर्गों को
लक्ष्य करके कहा—“महात्मावो, आप लोगों
ने देखा कि सभी में क्या क्या हुआ है!
दुर्योधन रोष के मारे मर्मा से चला गया
है। धृतराष्ट्र ने अपने को अभय बताया
है। मैं जिस कर्म के निमित्त आया था,
वह पूरा हो चुका। मैं युधिष्ठिर के पास



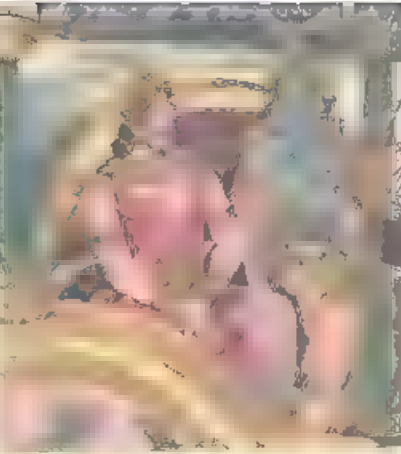


वापस लौट रहा है। मुझे आकाशीय सन्धि ब्रह्म कृष्ण की विदा करने अर्पण अपने घर बल गये। तब कृष्ण रथ पर अपनी कुर्सी कुर्सी पर गये कुर्सी का मगर, भ्रमाचार मुताप्रा और तहा-इंद्रो गज लंगा न अनेक प्रकार से दुर्घोषन के समक्ष, १५ नयन मुनन का नाम लगे तही लिया। लगता है कि कोरवा का अन्तिम समय निकल आया है। अर्जुन उन्हें दावान्त की तरह जता दगा में पाडवा के पास हो रहा है। तथा तुम वार्ड संज्ञा भज देना चाहती हो।" बन्ना युधिष्ठिर से कहा कि वह धर्मसारी वा अतिव्रतण से करे बाहुआ

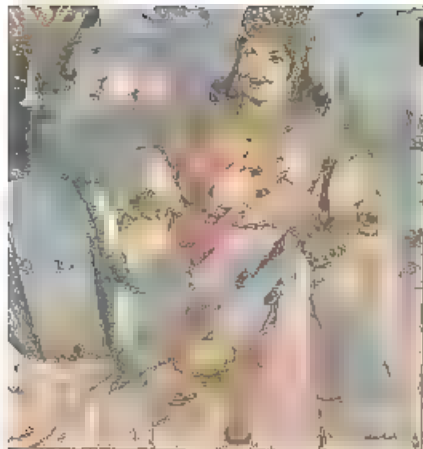
[[Fullscreen 137 54 172]]

उसने ३५५ को ५५५ से ३५५ से ५५५ वह विधि का विधान ही कहा जायगा। मुना है कि प्राचीन काल में इस न सांचकृत नाचक रासमि को समझने पड़ता भण्डल देना बाहुआ, मगर उभन उस दृष्टि करने से जन्मीकार करते हुए फटी या- "मैं अपने बाहुबल से जो राज्य जीत सकूंगा, वही मेरे लिए पर्याप्त है।" इस वरत युधिष्ठिर जिस मार्ग का अनुसरण कर रहा है, वह मुझे बिल्कुल पसंद नहीं है। वह मान राजा पांडु अथवा भीष्म के लिए भी अस्वाभाव गीम्य वह है। इसमें कहें युधिष्ठिर के लिए प्रतिनिध में वज्र दान तथा योग-मा दान की प्रार्थना चाहती है। राजा का अस्मन धर्मपूर्वक करना उत्तम अन्तिम का लक्षण है। विष्णुसत्त युधि और बाणेश्वर क्षत्रिय के लक्षण शांति नहीं देत। पांडवों को अपने पिता के राज्य का संपादन करना चाहिए पराया के आशय में जीने में मझ कानिया मुख प्राप्त होगा। युधिष्ठिर से कह दो कि वह युद्ध करके अपने पिता और पितामहा का मन्त्र लोको की पार्थि में योग दे। कृष्ण कुत्तों के संदेश से निकलकर कोरव प्रपन्न या विदा ल मान्यकी और कर्ण का अवन रथ पर उठकर रहाना हुए। रथ

पहुँचा तब कृष्ण ने कर्ण से एकान्त में कहा- 'कर्ण तुम न वेद और धर्मशास्त्रों का अध्ययन किया है। इसलिए तुम सारी बातें समझ सकते हो। कन्या के गर्भ में जिस का जन्म होता है, उसे कानीन कहते हैं। परी कन्या जिस के साथ विवाह करेगा, वही व्यक्ति कानीन का पिता है। तुम दुर्गादेवी के गर्भ से कानीन होकर पैदा हुए हो, इसलिए तुम उज्ज्व पांडु के न्येष्ठ पुत्र हो। धर्मशास्त्र के अनुसार तुम राजा बनने योग्य हो। पिता के पक्ष में पांडव तथा माता के पक्ष के दण्डिदशों का तुम्हारा विवाद रहे। तुम सब सच बोलो तो पांडव और पृथ पांडवा के पक्ष में लड़ने के लिए आय हुए तथा राजा तुम्हारे चरणों में प्रणाम करेंगे। इन्होंने राज्याधिकार हाथा। सीधे तुम्हें अपना लड़के पति के रूप में स्वीकार करेंगे। युधिष्ठिर तुम्हारे लिए खुश हो जाते हैं और तुम्हारा पुत्र राज्य अर्पण कराने में तुम्हें बड़ा फायदा हो जायगा। इस पर कानीन राजा - कृष्ण बार प्रति पण और लड़के का गण्य नयन जो कुछ बतलाया मैंने सुना। इसमें कोई संदेह नहीं है कि मैं राजा पांडु के पुत्र हूँ। कुतादिवा न परा जम दकर गुड नहीं मैं तुम विना



न अतिरथी सामन गुण न मझ के ज्ञान अर्पण गन्त राजा व हाथ सोय दिया, अर्पण उक्तार सुत्तर मेरा पक्षण करने वारे उन दानिक के लड़के न तथा वरा धरें नहीं है। यन को न मरर वसपण नमस्तरण किश में पुनया दनदारा का कन्या के साथ विवाह भी किया है। भरे गुरु और गीव भी न मरर ल भन मेरर वपण में नुत्तरण के सहस्र में, अर्पण के आशय में राजभीष का अर्जुन कर रहा है। मेरा समझन पाकर ही दुर्घोषन पांडव के साथ पद के लिए तैयार हो चुका है। उत्तर अर्जुन के साथ दण्ड पद के लक नून में बतलाया है। इसलिए भी भय या कोष के



सम्रद करा।

इस पर कृष्ण ने हँसकर कहा 'तेब तो तुम राज्य की कायना नहीं सकते। अच्छी बात है। वह महीना युद्ध के लिए अनुकूल है। एक सप्ताह में अमावास्या पड़ेगी। तुम मोघा, द्रोण और कृपाचार्य से कहो कि उस दिन युद्ध शरंज किया जाय। तुम भी युद्ध के लिए तैयार हो जाओ।'

इसके बाद कर्ण ने कृष्ण के साथ आभिमान किया, उनसे विदा लेकर अपने रथ पर चढ़ लौट आया।

कृष्ण के चल जान पर विदुर ने कृतीदेवी के पास आकर कहा—'मैं जान नहीं चाहता था, बड़ी होत आ रहा है पांडव और कौरव महा युद्ध में लाखों लोगों के प्राणों की बलि देने जा रहे हैं। कृष्ण अपने कार्य में असफल हो चक लगे हैं।'

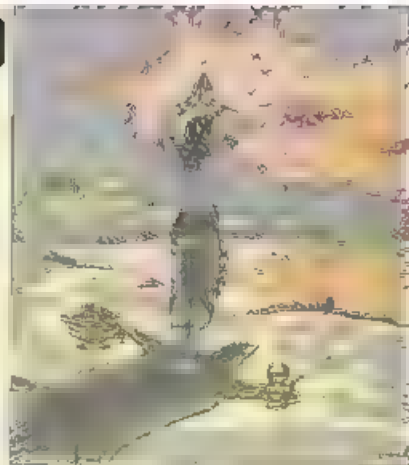
कृतीदेवी को भी युद्ध में भीष्म द्रोण आदि जैसे महापुरुषों का मर जाना अत्यन्त भयंकर प्रतीत हुआ। उस लगा कि अपने पुत्रों के द्वारा आसिया का खेद करके युद्ध में बिजय प्राप्त की अपेक्षा अग्निद्वार में धूल-धूलकर मरना कहीं अच्छा है। उसने यह भी सोचा कि होनवाली विपत्ति का कारणभूत कर्ण है और वह पांडवों के साथ

लुका है। इसलिए कुंती ने तृण के सत को पांडवों के अनुकूल बदलने का निश्चय किया और बंधा के लट पर पहुँची, वहाँ कर्ण जप कर रहा था।

कर्ण ने जप समाप्त करके कुंती को दखा। प्रथम करके बोला—'माँ मैं कर्ण हूँ तुम्हारे चरणों में प्रणाम करना हूँ बताओ, तुम किस काम से यहाँ पर आयी हो। मेरे द्वारा तुम्हारा क्या सहायता हो सकती है?'

बैठे, तुम मेरे पुत्र हो। राधा के पुत्र नहीं हो। सतवर्षी भी नहीं हो। मेरी बात रर विधवान करो। तुम अपने भाइयों से अपरिचित हो। दुर्योधन के वास्तु महान पाष करन जा रहे हो, यह अनुचित है। अर्जुन ने अपनी शक्ति के बल पर जिन राज्य की जीता, उसे कौरवों ने हथ लिया है। तुम उस धृतराष्ट्र के पुत्रों से ग्रहण करके तुम्हीं उस राज्य पर शासन करो। यलराम और कृष्ण जैसे तुम और अर्जुन प्रयत्नरंक रहो। तुम दोनों एक हो ज खेध तो तुम्हारे लिए कोई भी चीज अशभव न होगी। कुंती ने समझाया।

यथाशक्त कर्ण बरा भी विचलित नह। कुंती ने कुंतीदेवी से यो कहा—'माँ मैं तुम्हारे पुत्र नहीं हूँ।'



तुमने मेरे प्रति बहुत पाष किया है। कोई भी शत्रु मेरे प्रति इससे बड़ा पाष नहीं कर सकता। मेरे पैदा होते हो तुमने मुझे फेंक दिया। मैं क्षत्रिय के रूप में जन्म लेकर मृत्यु के रूप में पला हूँ। मैं क्षत्रियों के सरकारो में बिलकुल अपरिचित हूँ आज तक तुमने मेरे कुशल-क्षेम जानने का प्रयत्न नहीं किया। अतः तुम अपनी भलाई के वास्ते हित की बातें मुझ समझाती हो। इस समय मैं पांडवों के कस में जाऊँगा तो लोग यही कहेंगे कि मैं डरकर उनके पक्ष में गया हूँ। युद्ध की तैयारियाँ हो जाने के बाद मैं वह घोषित करूँ कि मैं पांडवों का साई हूँ, तो क्या



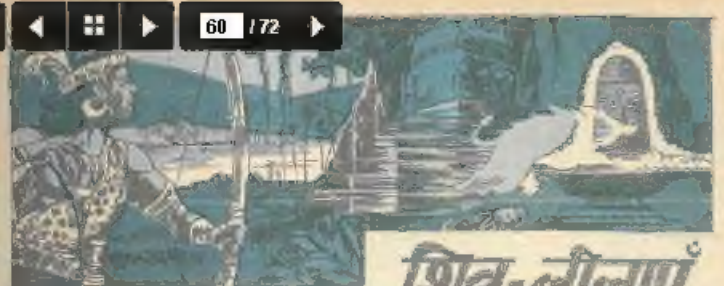
और भीम साथ अधोहिणियों के नेता थे। इन सारों नेताओं का एक महा नामक हो और वह भीष्म की समता कर सकता हो, ऐसा व्यक्ति कौन हो सकता है! यह खाल युधिष्ठिर ने अपने भाइयों के नामने रखा। इसपर सहदेव ने विराट का नाम सुझाया, नकुल ने द्रुपद का, अर्जुन ने धृष्टद्युम्न का और भीम ने विषण्डी का नाम सुझाया। किसी दो के विचार मेल नहीं खाते थे, इसलिए युधिष्ठिर ने सलाह दी कि कृष्ण के विचार के अनुसार महा सेनापति को नियुक्त किया जाय। इसपर कृष्ण ने धृष्टद्युम्न का समर्थन किया।

सभी राजाओं को जब मालूम हो गया कि पांडवों की सेनाओं का प्रधान सेनापति धृष्टद्युम्न नियुक्त किया गया है, तब सब लोग बहुत प्रसन्न हुए। सैनिक-संचालन शुरू हुआ। रथ आगे बढ़े, शंख और दंढुभियों का निनाद सुनायी दिया। तब पांडवों की सेनाएँ महा समुद्र की भांति चल पड़ीं। सेवा के अग्रभाग में भीम,

पांचाल थोड़ा चले। सेना के मध्य भाग में युधिष्ठिर थे। सेना के साथ तरह-तरह के वाहन, शंखवाले व्यूष, बैल, और परिवारक भी थे। मगर द्रौपदी अपने दात और दासियों के साथ उपप्लाव में ही रह गयी।

पांडवों ने सेनाओं के साथ रवाना होने के पूर्व आश्विनी के गार्ह और सोने का दान करके उनके आशीर्वाद प्राप्त किये। सेना के पृष्ठ भाग में विराट, कुंति भोज, धृष्टद्युम्न के पुत्र, आलीस हज़ार रथ, दो लाख घोड़े, पांच लाख पैदल सेना, साठ हज़ार हाथियों को साथ ले चेकितान, धृष्टकेतु, सात्यकी, कृष्ण और अर्जुन भी चल पड़े।

उस महा सेना के कुक्षेत्र में पहुँचते ही शंख बज उठे। सैनिक परमानंदित हो दिवाओं को प्रतिध्वनित करते सिहनाद कर उठे।



शिव-लीलाएँ

[५]

दक्षिण में पीतापिण्ड नामक प्रदेश में एक जंगल था। इसमें शबर जाति के लोग निवास करते थे। ऊँटमुख उसकी राजधानी थी। जंगली शबर शिकार तथा खेती करके अपने पेट भरते थे।

शबर जाति का राजा नाथनाथ था। उसकी पत्नी का नाम तंडे। उनके त्रिभु नामक पुत्र था। जब वह बड़ा हुआ तब उसने अस्त्र-शस्त्र की विद्याएँ सीख लीं। वह इन विद्याओं में ऐसा प्रवीण हो गया था कि जंगल में भागनेवाले हिरण और असमान में उड़नेवाले पक्षी को वह बड़ी आसानी से मार गिरा देता था।

शबर जाति के लोगों ने अपने राजा से निवेदन किया कि त्रिभु को शिकार खेलने की विद्या सिखानो होगी। इसके

लिए सभी शायरों ने पहले शिवजी की पूजा की, जानवरों की शलि दी, महुए की सराव पीकर नाच-गान किया, जुलूम निकाला। दूसरे दिन शिकार के लिए आवश्यक जाल, फंदे, कुत्ते आदि तैयार किये। तब अड़ी धूमधाम के साथ त्रिभु अपनी जाति के लोगों को साथ ले त्रिमपति के पहाड़ी की ओर चल पड़ा।

शबरों ने तरह-तरह के जंगली जानवरों तथा पक्षियों को मारा। माँस के टुकड़ों को लोहे की छड़ियों में घुमाकर पलाया, जंगली बहद में मिलाकर खाया। इस तरह शिकार खेलते कई दिन बितारे।

एक दिन शिकार खेलते-खेलते त्रिभु थक गया और एक मोलसिरी पेड़ की छाया में लेटकर सो गया। नींद में उसने



सपने में एक महा पुरुष को देखत। उसके शरीर पर-भभूत मल्ल हुआ था। वह बधनमं धारण किये हुए था, सर पर जटाएँ लटक रही थीं। कंधों पर कपालों की भाला और कंठ में लिय सुशोभित थे। उस महापुरुष ने सपने में त्रिशु से यों कहा-“बेटा, वहाँ के प्रहाड़ की तराई में, सुवर्णमूखी के तट पर बरगव के नीचे शिवजी है। तुम उनकी पूजा करो।”

त्रिशु चौंकर उठ बैठा। उससे आश्चर्य के साथ चारों ओर देखा। उसके अनुचर शिकार खेलने में मग्नगूल थे। इतने में एक बंगली सुअर किल्लाते उस ओर आ निकसा। त्रिशु ने सुअर का

गया। अहाँ यह सुअर अचानक अवश्य हो गया था, वहीं पर उसे एक शिव मंदिर दिखाई दिया। सपने में एक महापुरुष ने त्रिशु को इसी मंदिर के द्वारे में बताया था। इसलिए त्रिशु ने सोचा कि यह जो कुछ हुआ है, वह तब शिवजी को लोला और माया है। तब त्रिशु ने जिन के गामने साष्टांग प्रणाम किया और कहा-“भगवन, इस पहाड़ी प्रदेश में अहाँ और और बाध पूमा करते हैं, नवी के किनारे तुम क्यों बैठे हुए हो? तुम्हें भूख लगेगी तो खाना-पानी कीज ला देगा? मेरे घर ऊँड़मूँड़ में वधों नहीं जाते? मेरी बड़ी-छोटी नहनें तुम्हें सुअर, हिरण और पक्षियों का मांस भी पकाकर खिलावेगी! तरह-तरह के चावल से तुम्हें और, सहृद और फल भी तुम्हें खिलावेगी। अगर तुम मेरे साथ न चलोगे तो मैं भी यहाँ से हिलूँगा नहीं।”

इतने में बाकी शबर लोग त्रिशु को सोल करते वहाँ आ पहुँचे और बोले-“मासिक, तुमने जिस सुअर का पीछा किया, वह कहाँ गया?” मगर त्रिशु ने इस सवाल का कोई जवाब नहीं दिया। सब ने उसे धर चकने पर छोड़ दिया।

“शिवजी मेरे साथ चलेंगे तभी मैं भी चलींगा नहीं तो नहीं, तुम लोग चले

फिर शिवजी के च्यात में निमग्न हो गया, इस पर सभी शबर वहाँ से चले गये।

त्रिशु ने सोचा-“बेचारे, शिवजी कितने दिनों से भूले हैं?” यह सोचकर उसने कंधे पर धनुष रखा और चल पड़ा। उसने एक बंगली सुअर को मारा। उसका मांस टुकड़े-टुकड़े करके जलाया, सुवर्णमूखी से पानी लाकर शिवजी के सामने रखा और तब कहा-“भगवन, इन्हें खा लो।”

परंतु शिवजी ने कोई उत्तर न दिया, तब वह रोते हुए बोला-“भगवन, तुम इस मांस को न खाओगे तो मैं तुम्हारे चरणों के सामने अपने प्राण त्याग दूँगा।”

शिवजी ने त्रिशु की भक्ति पर संसल हो कहा-“उठो बेटा, मैं मांस खा लेता हूँ।” यों कहकर शिवजी ने सारा मांस खा लिया। इस प्रकार कुछ दिन बीत गये। एक दिन शिवजी शर तामक एक शैव ब्राह्मण उस मंदिर में आया और बोला-“भगवन, ये भूटी तीलियाँ कैसी? यह बदबू कैसी? तुम्हारे इस पवित्र मंदिर को किसने मलिन बनाया है? तुम नहीं बताओगे तो मैं खाना-पानी छोड़कर यहीं पर अपने प्राण त्याग दूँगा।”

“हे भक्त, तुम धबराओ मत! मेरा एक बंगली भक्त अपने ढंग से मेरी सेवा कर रहा है। मैं उसकी पूजा को स्वीकार कर रहा हूँ। यदि तुम उसकी भक्ति को



इलका बाही, मेरे पीछे छुपकर बैठ जाओ।" शिवजी ने उसे सम्झाया।

इतने में तिस्रहू मंदिर में आया। लिंग के सामने निवृत्त जुड़े पदार्थों को अपने घेर में एक ओर तरफा दिया। अपने मुँह में स्थित पानी को बुल्ला करके लिंग का अभिषेक किया, सब लिंग के सामने एक पक्षेय डालकर मांस के टुकड़ों को परोसा।

शिवजी ने तिस्रहू की भक्ति की परीक्षा लेनी चाही, इसलिए उसने बड़े मांस नहीं खाया और अपनी मुँदी आँखों से आँसु गिराते लगा। इसे देख तिस्रहू खबर मया, और आँख का उल्लास करने लगा। उसने कई तरह के इलाज किये, पर कोई फायदा न रहा, उल्टे शिवजी की आँख से सून गहने लगा।

तिस्रहू की मध्यक्ष में न आया कि क्या किया जाय। उसने सोचा कि आँख का इलाज आँख ही है। यह सोचकर झट उसने तलवार से अपनी एक आँख निकाली और शिवजी की आँख में लगा दी।



Fullscrean 127 X 64 172

"उरने की कोई बात नहीं। इसका भी इलाज मे जानता हूँ।" यों कहते तिस्रहू अपनी दूसरी आँख निकालने को हुआ, तब शिवजी ने प्रत्यक्ष होकर उसका हाथ पकड़कर रोक्ते हुए कहा—"इधर जाओ।"

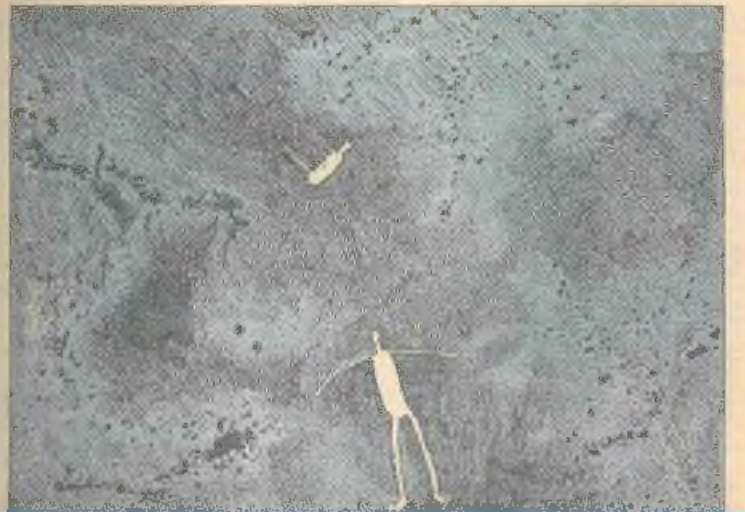
इसके बाद शिवजी ने बाह्य भक्त से कहा—"शिवगोचर, तुमने इस जंगली भक्त की भक्ति देख ली-है न?" इसके बाद दोनों को लक्ष्य कर शिवजी ने पूछा—"सांग लो, तुम दोनों क्या क्या कर चाहते हो?"

"मगवान, आप हमें वो वरदान देना चाहते हैं, वही बीजिये! हम आप से क्या माँग सकते हैं?" यों कहते दोनों शिवजी के सामने साष्टांग प्रणाम करने लगे। शिवजी ने उन दोनों को फिर से सात्कारिक मावाजाज में पढ़ते न देकर अपने में विलीन कर लिया।

१३७. राक्षसी चित्र

उत्तर अमेरिका के कालिफोर्निया नामक राज्य में क्लेन नामक स्थान पर वे ईसवी हैं। जमीन पर से दग चित्रों का पूर्ण रूप दिखाई नहीं देता। इसलिए इन चित्रों के चित्रकारों को डीक से यह देखने का मौका मिला न होगा कि वे कैसे चित्र अंकित कर रहे हैं। ऐसे अनेक चित्र उस प्रदेश में कहीं के झाप बसित हैं। इनमें विमान के द्वारा ही देखा संभव है। १९४३ के पहली बार इनके कोटो लिये गई हैं।

लिखित लिखित चित्र में दो ही चित्र दिखाई दे रहे हैं, मगर उस प्रदेश में और कुछ राक्षसी चित्र हैं। इन चित्रों की गहराई अधिक नहीं है, मगर संवार्द बहुत बराबर है। मनुष्य के चित्र की संवार्द छर से पैर तक १७० फुट है। फैलाये गये दोनों हाथों के बीच की दूरी १४० फुट है। दूसरा चित्र जमी पृष्ठवाले चोटे का है। ई. सन्. १९४० के पूर्व उस प्रदेश में छोटे चित्रकुल न थे, इसलिए यह अनुमान लगाया जाय है कि इसके बाद ही उन राक्षसी चित्रों को अमेरिकन दृष्टिकर्ता ने अंकित किया होगा।





Fullscreen



127

